मुजीब का प्रिय गीत

●

"उदयर पाथे
सुनिकर वाणी
भय नाई,
ओरे भय नाई
प्राण जे करिबे दान
क्षय नाई, तार क्षय नाई"

●

मैं जाते हुए सूर्य के पथ पर,
किसी की वाणी सुनता हूँ,
मेरे पुत्र, डरो मत
क्योंकि
जो कोई सर्वोच्च बलिदान करता है
वह हमेशा अमर रहता है।

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

भूमिका

मुक्तिवाहिनी का आक्रोशपूर्ण विप्लवी स्वर लेकर जो रचनाएँ यहाँ प्रस्तुत हो रही हैं, उनका राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण से विशेष महत्व हैं। कवियों ने वास्तव में जन-जीवन की क्रांतिकारिणी भावनाओं को वाणी प्रदान की है। बंगला देश की स्वतन्त्रता का संघर्ष मानों एक कसौटी थी, जिस पर इस देश का आत्म-सम्मान कसा गया और समस्त संसार ने देखा कि उस संघर्ष की कसौटी पर देश का आत्म-सम्मान कंचन की रेख की भाँति उभर आया। इस आत्म-सम्मान की गूँज इन कवियों की वाणी में है, जो इस संग्रह में संकलित हैं।

मैं इन कवियों की वाणी का स्वागत करता हूँ और यह मंगल कामना प्रस्तुत करता हूँ कि कवियों के ये स्वर न केवल वर्तमान में, वरन् भविष्य में भी गूँज कर देश की गौरव-गाथा प्रशस्त करेंगे।

साकेत, इलाहाबाद
४-५-७२

—रामकुमार वर्मा

916/पी०एस०
सचिवालय,
लखनऊ, दिनांक, जनवरी २, 1972

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि निराला साहित्य संस्थान, उन्नाव ने ''मुक्ति वाहिनी-विजय-वाहिनी'' नाम से एक वीर रस काव्य संकलन प्रकाशित करने का निश्चय किया है। यह एक अच्छा प्रयास है। आज की बदली हुई परिस्थिति में देश के नवयुवकों में नव चेतना तथा ओज लाने के लिये इस प्रकार के संकलनों की आवश्यकता है

संस्थान का प्रयास अपने उद्देश्य में सफल होगा, ऐसी मुझे आशा है। इसके लिये मैं अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

(कमलापति त्रिपाठी)

श्री महेश चन्द्र मिश्र,
निराला साहित्य संस्थान,
230, पन्नालाल पार्क,
उन्नाव।

समर्पण

•

शांति-पुत्री
बंगला-देश-जन्मदात्री
भारत-रत्न
प्रियदर्शिनी
युग-चेतना की उन्नायिका
शांति-क्रांति की ललक
एक देश : एक नेता
भारत की प्रधान मंत्री
श्रीमती इन्दिरा गांधी को
'मुक्तिवाहिनी : विजयवाहिनी'
कविता-संकलन
सादर समर्पित ।

—विधु

बंगला देश के मुक्ति-संग्राम में हुए भीषण नर-संहार ने मानव-हृदय को दहला दिया और उसमें अदम्य-साहस एवं स्वाभिमान की अपूर्व-ज्योति ही प्रज्ज्वलित कर दी, जो युग-युग तक स्वतंत्रता का मंगल-गान गाएगी, मानवता के पुण्य इतिहासों-बलिदानी पृष्ठों को स्वर्णाक्षरों में चिर-स्मरणीय, अक्षुण्ण एवं प्रेरणाप्रद रखेगी।

बंगला देश एक अभिनव गणतंत्रीय राष्ट्र आज पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न है, इसका भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल एवं प्रगतिपूर्ण है। विश्व के मानचित्र से साम्राज्यवाद नाम की घृणित-व्यवस्था दिनों दिन दूर होती जा रही है। आज का मानव प्रगतिशील समाजवादी जनतंत्रीय भावनाओं को मूर्त्तरूप देना चाहता है। सच भी है, यही-कहीं मानव-कल्याण और विश्व की प्रगति। जहर बुझे षडयन्त्र, इनेगिने लोगों की मनमानी, स्वार्थपोषित, वृत्ति-व्यवस्था से समाज का विद्रूप-रूप हमारे समक्ष है आज भी यदि आदमी न जग सका तो फिर कब जागेगा? कब तक चलेगा यह दादा व्यापार कोरी ईमानदारी और यश लिप्सा का चमत्कारपूर्ण सृष्टि संचार? अब कोई भी इस सत्य को नकार नहीं सकता। हमारे देश की कुशल, चिन्तन-शील नेता श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने यह युग-ध्वनि सुन ली है, यही एकमात्र कारण है कि उन्हें दिनों दिन हमारे देश की जनता का प्यार, निष्ठा एवं दृढ़तम विश्वास मिलता जा रहा है और आज लोक-चेतना की यह सजग प्रहरी पूर्ण विश्व के लिए एक अबूझ पहेली-सी बन गई है। हमें भी क्रांन्ति के इन स्वरों को ध्यान देकर सुनना है और अपने को बड़ी तेजी से बदलना है; वाणी को कर्म में उतारना है।

'मुक्तिवाहिनी : विजयवाहिनी' ऐसे ही ओजस्वी-राष्ट्रीय स्वरों का चुने हुए ५१ सजग चिन्तनशील कवि-कवियित्रियों की कविताओं का संग्रह है। मेरा यह लघु-प्रयास जन-भावना को राष्ट्रीयता का तनिक भी बोध करा सका तो एक अपूर्व-तुष्टि मिलेगी—मात्र कर्तव्य-बोध की। युद्ध में तलवार की भूमिका तो महात्वपूर्ण है ही; किन्तु कलम की भूमिका का भी अपना एक विशिष्ट स्थान है। जब शत्रु अपनी मनमानी करने पर उतर आता है तो तलवार उसका सिर उतार लेती है और ... मैंने की सफल प्रेरणा, बल, बुद्धि एवं साहस

"जवानों बहादुरी से लड़ो ?" जैसे शब्द अनुपम-शौर्य, साहस और शक्ति
का आह्वान कर शत्रु को मार भगाने की दृढ़तम-संकल्पना के साथ ह
बलिदान करने को उद्यत कर देते हैं। इधर ओजस्वी कवि-वाणी........

"आज देश पर संकट छाया, वीरों सीना तान दो।
तन-मन-धन सर्वस्व निछावर कर दुश्मन की जान लो॥"

युद्ध-गर्जना में मातृभूमि की रक्षा के लिए नस-नस मे अद्भुत-जोश
भर देती है। इस संकलन मे ऐसी शाश्वत-प्रेरक अभिव्यक्ति को ही ठौर
दिया गया है, जिससे जन-मन मे अपने स्वाभिमान और स्वातंत्र्य-देव के
प्रति श्रद्धा, भक्ति एव कर्त्तव्य परायणता का बोध, दृढ़-विश्वास का संचार
बन सके।

इस संकलन मे कुछ कवि-बन्धुओ को ठौर नही दे पाया हूँ, कारण—
उनकी काव्य-प्रतिभा अथवा रचना का स्तर नहीं, अपितु रचनाएँ देर से
प्राप्त हुई हैं, बस। मुझे विश्वास है कि वे उदरमना साथी मेरी भावना को
अन्यथा न लेकर पूर्ववत् स्नेह एवं सद्भाव प्रदान करते रहेंगे।

रचना-क्रम कवि-नाम के वर्णानुसार दिया है ताकि 'पहले कौन'
की एक भ्रमपूर्ण-धारणा ठौर न पा सके। मेरे लिए सभी रचनाकार संपूज्य
वरेण्य हैं। मैं उन सभी कवि-कवियित्रियों का आभारी हूँ जिन्होंने इस संकलन
हेतु रचना प्रदान की है एवम् स्नेह, आशीष-सहानुभूति से मुझे साहित्य-सेवा
का अवसर दिया है। मैं विद्वान्-मनीषी परमादरणीय अग्रज श्री वाचस्पति
गैरोला का स्नेह-भाजन बन सका, गौरवान्वित हूँ। उनका यह स्नेह प्रस्तुत
संकलन की साज-सज्जा, छपाई, आवरण-पृष्ठ के सुझाव एव सहयोग की
भूमिका में ही नहीं, मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि भी है। मैं उनका
हृदय से आभारी हूँ। महान् साहित्य-सेवी एवं विद्वान् डा० रामकुमार
वर्मा के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरी भावना को
स्नेह-सहानुभूति देकर अपने शुभाशीर्वचन प्रदान किए।

अन्त में मैं इस संकलन के प्रकाशक एवं निराला साहित्य संस्थान के
संचालक पं० विश्वनाथ त्रिपाठी के प्रति साधुवाद प्रकट करता हूँ, जिन्होंने
बड़ी लगन से निष्ठापूर्वक यह संकलन सुन्दर-ढंग से प्रकाशित किया है।

जयहिन्द!

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

अमरबहादुर सिंह
'अमरेश'

रणभेरी-स्वर

मुक्तिवाहिनी : विजयवाहिनी

मुक्तिवाहिनी बढ़ी, बढ़ी फिर-
विजय-वाहिनी मर्दानी !
रण-चंडी-सी खड़ी इंदिरा-
बनकर झांसी की रानी !

हम और युद्ध

हमको भारत का मानचित्र
हर ओर दिखाई देता था !
उठती निगाह तो ढाका औ-
जैसोर दिखाई देता था !

धमकियाँ : एक उत्तर

लड़ना चाहो जितना लड़ लो-
भुट्टो पूरी तैयारी से !
अब तक है पाला पड़ा नहीं-
शायद भारत की नारी से !

● अमरेशबहादुर सिंह
'अमरेश'

जय-गान

जो जननी के लिये हथेली पर सिर ले तैयार है।
कोटि-कोटि कंठों से होती, उसकी जय-जयकार है।।

अपना पौरुष जगा रहा जो—
पथरीली चट्टानों में।
खड़ा हुआ जो सीना ताने—
आँधी औ, तूफानों मे!

मातृ-भूमि की बलिवेदी पर जिसका तन बलिहार है।
कोटि-कोटि कंठो से होती, उसकी जय-जयकार है।।

जिसने अपनी नाव छोड़ दी—
लहरों में मझधारों में।
जो खेला करता है हँस-हँस—
पतझर और बहारों मे।

जो कांटों का ताज पहनकर, करता रण–सिंगार है।
कोटि-कोटि कंठों से होती, उसकी जय-जयकार है।।

जो मंजिल की बाँह पकड़ कर-
होड़ लगाता राहों से।
अँगारे बरसा करते हैं—
जिसकी तनी निगाहों से।

कण-कण जिसकी यादगार में बन जाता मीनार है।
कोटि-कोटि कंठों से होती, उसकी जय-जयकार है।।

●

● आदित्य त्रिपाठी

अन्तर्सत्य

(१)

शंखध्वनि करती दिग्वन्दन,
निर्गत कायरता का क्रन्दन;
लो! छँटा जा रहा तार-तार अँधियारा।
किरनों के स्वर फूटे पड़ते-
जागर्त्तिक शर छूटे पड़ते-
तटहीन, प्रवाहोच्छल पौरुष की धारा।।

(२)

संयुग-सैकत झंझा-झकोर,
वैरी की रण-सज्जा अघोर,
हम महासिन्धु भी पी जाते पल भर में।
तापसी-धरा के हम सपूत,
हम सत्य-अहिंसा से प्रसूत,
तेजोमय, गर्वोन्नत प्रालेय-प्रहर में।।

(३)

पथवर्ती सर्पों के शत-फन,
हम कुचल बढ़े आगे उन्मन,
स्वातन्त्र्य-शक्ति के स्तोत्र दिव्य गाने को
करते उन्मीलन, उच्छेदन,
अन्तर्दर्शन, अन्तर्भेदन,
दुर्जेय-अरिन्दम-तत्व बोध पाने को

(४)

यह रूप-वासना का पलास,
प्रच्छन्न हलाहल सा विलास-
पातक, गीता की अनथक सद्वाणी ।
सुख-वैभव हो या तुच्छ-वित्त,
जो कुछ भौतिकता का निमित्त;
अभिनन्द्य नहीं, कर्तव्य-शील प्राणी में ।।

(५)

हम तुङ्ग हिमालय के उभार,
हम सागर के आनत प्रसार,
उर्वर कछार में शस्य-श्याम लहराते ।
कण-कण में ऊर्जिद्रव्य-भाव,
जन-जन से अन्तर्प्रेम लगाव,
हम करुणामय हो तीर्थ सलिल बन जाते ।।

(६)

हम लिये नित्य नूतन-उमंग,
चलते युग-युग आगे अभग,
निष्काम-प्रीति के लिये बाहु फैलाये ।
हम शरणागत-वत्सल महान !
हम भासमान ! चिद्भास मान !!
कोई हमसे मगल-विहान ले जाये ।।

• आरसी प्रसाद सिंह

अभियान-गीत

नवयुग का मंगल शंख बजा,
जन-जन का गूँज उठा अन्तर,
जब भारत की जनशक्ति जगी,
कण-कण के मन में उठी लहर।
पाषाण-शिलाएँ भी हिम की,
जागरण-मन्त्र से जाग उठीं।
निर्धूम अग्नि की ज्वालाएँ,
आलस-निद्रा को त्याग उठीं।

जो मलयानिल बन बहता था,
वह प्रलयंकर तूफान हुआ।
चल पड़े तरुण ले विजय-ध्वजा,
बलि के पथ पर आह्वान हुआ॥

चल पड़े जिधर से वीर-चरण,
बन गया उधर ही पथ दुर्जय।
सागर में तैर चले पर्वत,
पर्वत समतल हो गया सदय॥
रण रंगमंच की ओर अभय,
भारत जननी के लाल बढ़े।
करवाल उठाकर कोटि-कोटि,
कालों के काल कराल बढ़े॥

दुर्बल भी भीम-समान हुआ,
तिनका भी पावक-बाण हुआ।
चल पड़े तरुण ले विजय-ध्वजा,
बलि के पथ पर आह्वान

जो शूरवीर बलिदानी हैं,
घर फूंक तमाशा करते हैं।
चलते हैं सिर मे कफन बाध,
वे नही मौत से डरते हैं॥
अपने ही निर्मम-हाथो से,
वे आग चिता पर धरते हैं।
बिजली बन कहीं गरजते हैं,
बादल बन कहीं उमड़ते हैं।

जो कर्म किया, इतिहास बना,
जो बोले वचन विधान हुआ।
चल पड़े तरुण ले विजय-ध्वजा,
बलि के पथ पर आह्वान हुआ॥

● आरसी प्रसाद सिंह

विजय-भेरी

फूँक दो भेरी विजय की, मुक्ति का डंका बजा दो।
तुम जहाँ भी हो, वहीं से पाँव आगे को बढ़ा दो ॥

खेत हो, खलिहान हो या युद्ध का मैदान हो,
तुम जहाँ भी हो, वही पर याद हिन्दुस्तान हो !
हाथ हल की मूठ पर हो या धनुष पर वाण हो,
देश-सेवा की लगन हो, देश पर ही ध्यान हो ॥

शीश हो या स्वर्णधन हो, भेंट माता पर चढा दो।
फूँक दो भेरी विजय की, मुक्ति का डंका बजा दो ॥

देश का सम्मान पहले, बाद कोई बात हो,
देश के सम्मान पर कोई नही आघात हो।
देश पर ही धन निछावर, देश पर ही रात हो,
प्राण जायें, देश की बाजी नहीं पर मात हो ॥

और झंडे को उठा दो, और ज्वाला को जगा दो।
फूँक दो भेरी विजय की, मुक्ति का डंका बजा दो ॥

देश ही जब लुट गया, तब हम कहाँ रह जाएँगे,
देश ही जब मिट गया, तब हम सभी मिट जाएँगे।
देश पर दुश्मन चढा, तो चैन कैसे पाएँगे,
देश पर बिजली गिरी तो हम सभी जल जाएँगे ॥

पास हो जो कुछ तुम्हारे, देश-सेवा में लगा दो।
फूँक दो भेरी विजय की, मुक्ति का डंका बजा दो ॥

● ओम प्रकाश मिश्र
'प्रकाश'

गंगा मांग रही कुर्बानी

आज मरण का महापर्व है, जाग उठो सैनिक सेनानी ।
रावी, सतलज उबल रही हैं, गंगा मांग रही कुर्बानी ॥
सागर में ज्वालायें सुलगीं, हुआ प्रज्ज्वलित अम्बर सारा ।
पाकिस्तानी सैबर जेट को, नेट पर चढ़ गणपति ने मारा ॥
मन्दिर पर जब चली गोलियाँ, मसजिद तब रोई चिल्लाई ।
जब कुरान की आयत जख्मी हुई, तभी चीखी चौपाई ॥
सम्प्रदाय हो गये विसर्जित, भारत सबकी एक निशानी ।
गंगा मांग रही कुर्बानी ॥

हम मृत्युंजय के त्रिशूल हैं, शोणित के शाश्वत सोते हैं ।
मातृभूमि के लिए समर में, फसल शीश की हम बोते हैं ॥
फड़क रही धमनियाँ हमारी, अरि का आज वक्ष दल देंगे ।
रोक नहीं पायेगा कोई, ले संगीन जिधर चल देंगे ॥
ओ नापाक-पाक के पापी, तानाशाह दुष्ट पाखण्डी ।
अगर विरामादेश न मिलता, तो हम होते रावलपिण्डी ॥
नक्शे पर तब-पाक न होता, होता शेष न पाकिस्तानी ।
गंगा मांग रही कुर्बानी ॥

ओ भारत की माटी वालों, खेतों का अभिनन्दन कर लो ।
मिल का पहिया नहीं रुकेगा, मजदूरों कल-वन्दन कर लो ॥
अब तक हम विदेश के याचक बने, भाल था काला-टीका ।
है स्वीकार चुनौती तेरी, ओ विपदन्त, लगे अमरीका ॥
अब स्वदेश का व्रत अपनालो, है धिक्कार माल जापानी ।
गंगा मांग रही कुर्बानी ॥

भारत सबका एक राष्ट्र है, घर में अब दल-द्वन्द नही है।
सर पर कफन सभी बाधे हैं, घर मे अब जयचन्द नहीं है॥
माता के ऊपर हमला हो, वेटे के यदि दर्द नहीं है।
तो उसके सीने में लोहू नही, और वह मर्द नहीं है॥
अगर देश के काम न आई, तो फिर साथी व्यर्थ जवानी।
गंगा मांग रही कुर्बानी॥

● ओम प्रकाश मिश्र
'प्रकाश'

गंगा मांग रही कुर्बानी

आज मरण का महापर्व है, जाग उठो सैनिक सेनानी।
रावी, सतलज उबल रही हैं, गंगा मांग रही कुर्बानी ॥
सागर में ज्वालायें सुलगी, हुआ प्रज्ज्वलित अम्बर सारा।
पाकिस्तानी सैबर जेट को, नेट पर चढ़ गणपति ने मारा ॥
मन्दिर पर जब चली गोलियाँ, मसजिद तब रोई चिल्लाई।
जब कुरान की आयत जख्मी हुई, तभी चीखी चौपाई ॥
सम्प्रदाय हो गये विसर्जित, भारत सबकी एक निशानी।
गंगा मांग रही कुर्बानी ॥

हम मृत्युंजय के त्रिशूल है, शोणित के शाश्वत सोते हैं।
मातृभूमि के लिए समर में, फसल शीश की हम बोते हैं ॥
फड़क रही धमनियाँ हमारी, अरि का आज वक्ष दल देंगे।
रोक नहीं पायेगा कोई, ले संगीन जिधर चल देंगे ॥
ओ नापाक-पाक के पापी, तानाशाह दुष्ट पाखण्डी।
अगर विरामादेश न मिलता, तो हम होते रावलपिण्डी ॥
नक्शे पर तब-पाक न होता, होता शेप न पाकिस्तानी।
गंगा मांग रही कुर्बानी ॥

ओ भारत की माटी वालों, खेतों का अभिनन्दन कर लो।
मिल का पहिया नहीं रुकेगा, मजदूरों कल-वन्दन कर लो ॥
अब तक हम विदेश के याचक बने, भाल था काला-टीका।
है स्वीकार चुनौती तेरी, ओ विषदन्त, लगे अमरीका ॥
अब स्वदेश का व्रत अपनालो, है धिक्कार माल जापानी।
गंगा मांग रही कुर्बानी ॥

मुक्तिवाहिनी

भारत सबका एक राष्ट्र है, घर में अब दल-द्वन्द नहीं है ।
सर पर कफन सभी बाधे है, घर में अब जयचन्द नही हैं ।।
माता के ऊपर हमला हो, बेटे के यदि दर्द नहीं है ।
तो उसके सीने मे लोहू नही, और वह मर्द नहीं है ।।
अगर देश के काम न आई, तो फिर साथी व्यर्थ जवानी ।
गगा मांग रही कुर्बानी ।।

● ओम प्रकाश मिश्र
'प्रकाश'

देश की माटी

माटी का ही अपना प्रभाव
जिससे शरीर बन जाता है।
माटी का ही अपना प्रभाव,
अणु बन विस्फोट कराता है।

कुछ माटी माटी होती है,
कुछ माटी जीवन जाती है।
कुछ माटी ऐसी होती है,
अपना इतिहास बनाती है।

भारत की पावन-माटी ने,
थे राम-कृष्ण-गौतम जाये ।
इस वीर-प्रसविनी-माटी ने,
अर्जुन, राणा, बन्दा पाये।

दक्षिण का वीर शिवा खेला,
इसकी पथरीली माटी में।
राणा का भाला चमक उठा,
रेतीली हल्दीघाटी में।

रोशन, बिस्मिल, अरु भगतसिंह,
इस माटी को वरदान मिले।
नेता सुभाष के एक बोल पर,
कोटिक वीर जवान मिले।

गाधी-गौतम ने इसी भूमि से,
दिया शान्ति का शुभ-नारा।
यह वही धरा है जहाँ पराक्रम,
गया अहिंसा से मारा।

अब तक तो शान्ति कबूतर ही,
हमने अपने घर पाले हैं।
नादान-दुश्मनो ! सावधान,
गान्धी संगीन सम्हाले हैं।

यह वही धरा जो विश्व शांति को,
अपना लक्ष्य बनाती है।
अत्याचारी के दमन-हेतु,
धरती पर राम बनाती है।

इसका अपना है स्वाभिमान,
अभिमानी मस्तक ऊँचा है।
इसकी माटी की रक्षा में,
भारत सन्नद्ध समूचा है।

काश्मीर हमारा नन्दन वन,
धरती का स्वर्ग दुलारा है।
काश्मीर देश का मुकुट-मणि,
जन-जन का हृदय दुलारा है।

डल ऊलर के सुन्दर शिकरे,
केसर की सुरभित बयारी है।
इसकी रक्षा मे तेजवान,
तपती तलवार हमारी है।

तुमने चुनार के गुल्मों को,
अपनी संगीन दिखाया है।
थी वही सो रही नूरजहाँ,
को तुमने झटक जगाया है।

तुमने सोचा था काश्मीर,
नादान दुधमुहाँ भोला है।
तुम समझ नहीं इतना पाये,
हिम का हर पत्थर शोला है।

जो खून न हो मा को अर्पित,
वह खून नहीं है पानी है।
हमको भय नहीं मौत का है,
मरकर हम जीवन पाते हैं।

तुमने विमान का बलात्नयनकर,
अपनी जाति बता डाली।
कितने तुम भीषण-डाकू हो,
अपनी औकात बना डाली।

तुमने केसर की क्यारी में,
जलती बारुद बिछाई है।
डल-ऊलर के अन्तस्थल मे,
तुमने ज्वाला सुलगाई है।

अब बदर बनाकर हार गये,
झेला रण का प्रतिदान नही।
यदि युद्ध कही फिर से जागा,
तो होगा पाकिस्तान नही।

तानाशाहो मदहोश न हो,
इस लोकतंत्र को जीने दो।
मन्दिर, मसजिद, गुरुद्वारे को,
अमृत-आयत को पीने दो।

हिन्दू-मुसलिम, मन्दिर-मसजिद,
गुरुद्वारे अपने प्यारे हैं।
गिरजाघर, मठिया औ विहार,
पावन है पूज्य हमारे है।

हम शपथ देश की कहते हैं,
अब और न धोखा खायेंगे।
अपनी माटी की रक्षा मे,
सगर मे शीश कटायेंगे।

जो अमरदेश पर चढे नही,
तो फिर वह व्यर्थ जवानी है।

अपनी माटी की रक्षा में,
संगर में शीश कटाते हैं।
भारत के वीर सिपाही बढ़,
दुश्मन पर आफत ढायेंगे।

मजदूर मिलों में मिल करके,
गोली संगीन बनाएंगे।
अमरीकी घृणित चुनौती को,
हम व्यर्थ नहीं जाने देंगें।

हम राजनीति में गेहूँ की,
दुर्गन्ध नही आने देंगे।
चप्पे-चप्पे से हर किसान,
धरती से अन्न निकालेगा।

दिन रात चला हल खेतों में,
धरती से अन्न निकालेगा।
पैटन-टैंको की चिन्ता क्या,
सैवरजेट को भी माफी है।

अब्दुल हमीद की कमी नहीं,
केवल कीलर ही काफी है।
गंगा-यमुना की शपथ,
शत्रु के सीने पर चढ़ जायेंगे।

अपने भारत की राष्ट्र-ध्वजा,
दुश्मन के सर फहरायेंगे।
भारत माता का अंग कभी
अब और नही कट सकता है।

मेरा सिर चाहे कट जाये,
कश्मीर नही कट सकता है।

• श्री उमा शंकर
शुक्ल 'उमेश'

जय बोलो वीर जवानों की

जिनकी हुंकारों के सम्मुख,
दुश्मन का साहस क्षीण हुआ।
जिनके बल-पौरुष-शौर्य्य,
धीर के आगे अरि बलिहीन हुआ।
इस विजय-पर्व की वेला में जय बोलो उन बलवानों की,
अपने प्राणों की भेंट चढ़ा,
जिनने स्वदेश की रक्षा की।
सीने पर गोली खाकर भी,
सीमा की पूर्ण सुरक्षा की।
इस मुक्ति-पर्व की वेला में, जय बोलो उन बलिदानों की।।
जो महामृत्यु से टकराए,
लेकिन अपनी परवाह न की।
जो संकल्पों की ज्वाला में,
जल गए स्वयं पर आह न की।
इस पुण्य-पर्व पर जय बोलो, उन देश भक्त-परवानों की।
जय उनकी जिनका गर्म-रक्त,
लिख गया विजय-गौरव-गाथा।
जय उनकी जिनने मातृभूमि—
हित कटा दिया अपना माथा।।
इस महापर्व पर जय बोलो, उन बलिदानी-अरमानो की।।

● उमा शंकर शुक्ल
'उमेश'

रोक पाएगा न कोई

वीर हैं वे छेड़ते जो मुक्ति का संघर्ष पावन,
झेलते हैं आग से जो मोर्चे का पा निमंत्रण
वीर हो तुम, वीरता की तीव्रता लहरा रही है
हम तुम्हारी भावना-लौ को कभी बुझने न देंगे !!

मौत बन तुमने सही है क्रूरता की आपदाएँ
झेलते अब तक रहे तुम वचकों की यातनाएँ
क्रांति की करवट तुम्हारी रंग लाकर ही रहेगी
हर तुम्हारे-क्रांति पौरुष को कभी घटने न देंगे !!

रोक पाएगा न कोई अब तुम्हारी भावना को
मोड़ पाएगा न कोई मुक्ति-पथ की साधना को।
ले शहादत-भावना तुम, मातृ-भू पर मिट रहे हो
हम तुम्हारी भावना के ज्वार को मिटने न देंगे !

वह प्रखर पौरुष तुम्हारा आततायी कांपते है
मृत्यु से भयभीत होकर प्राण लेकर भागते हैं।
तुम प्रलय-बादल बने अब शत्रु पर मंडरा रहे हो
हम तुम्हारी जय-पताका को कभी झुकने न देंगे !!

मातृ-भू बलिदानियों की व्यर्थ जाती हैं न बलियां
रक्त से खिलती इन्हीं के मुक्ति की कमनीय-कलियाँ।
कह रहा इतिहास तुमको मुक्ति मिलकर ही रहेगी
हम तुम्हारे रक्त के हर बूँद की गाथा लिखेंगे !!

मुक्तिवाहिनी

टूट कर बिखर गया
जैसे कोई महावृक्ष
प्रभंजन की चपेट-से,
धरा पर आ गिरा।
यह वो शक्ति थी
मनोबल की शक्ति थी,
यह वो आवाज थी
एकता की गाज थी,
और जब मनोबल की एकता
शक्ति-सम्पन्ना बन
गाज-सी गिरती है
बड़े-बड़े शिखरों की
छाती फट जाती है
और फिर
एक नए प्रात का
शीघ्र ही उदय होता है
ऐसा ही उदय
अभिनव पूर्वोदय
हुआ है हमारी सीमा पर
यह नया देश
रक्त-बीज से उपजा
पूर्वा चल का नया देश
है महिमामय बांगला देश
मुक्तिवाहिनी की
अभिनव-शक्ति से भरा
बांगला-देश !
सोनार बांगला देश !!

● काका बैसवारी

रही पाक मा जमाई

लइकै फलदान गये जुल्फिकार राष्ट्र संघ,
कपट के थार मा सुपारी करैं खड़भड़ ।
बेटी बेइमानी, भै सयानी ताके वर-हेतु,
पूत काश्मीर से मिलाय रहे सड़फड़ ।

मांगें इन्दिरा दहेज प्रेम-शील-शान्ति-क्या
मना अगवानी मा गोलन केरि भड़-भड़
स्वाचैं कोसगिन बिचवानी यहै बार-बा
बाद बरतउनी मा न होय कहूँ गड़बड़

बिटिया का मामा अमरीका परेशान ह्वै,
दीन न दहेज जाई चाहे जउनु कुछ होय ।
कूट-नीति माई कहै राशन न दीन जाई,
करति अपन हाई चाहे जउनु कुछ होय ।

चीन चाऊ मौसिया ससुर पाँय पटकत,
रही पाक मा जमाइ चाहे जउनु कुछ होय ।
कहै इन्दिरा रिसाई चाहे फिर हो लड़ाई,
अस न करूँ सगाई चाहे जउनु कुछ होय ॥

● काका बैसवारी

शेख ड्राइवर, बंगला रेल

पाप पाक के आये घिर।
किसी की हरकत किसी के सिर।
लोग पाक का छोड़ें हाथ,
शेख का देते खुल कर साथ।

सीखें सभी गुरिल्ला-खेल,
शेख ड्राइवर बंगला रेल।
पटरी एक अवामी चाल,
इन्जन-नीति धुआँ कलिकाल।

आजादी का कोयला डाल,
भट्ठी-सा धधके बंगाल।
भूल गई टिक्का की टिर।।
मियाँ की हरकत मियाँ के सिर।

ढाका स्टेशन का यन्त्र,
जोश है टीटी गार्ड स्वतन्त्र
वैकुम काट रचे षड़यंत्र—
भुट्टो पढ़ें पुराना-मन्त्र

भाप बना उमड़े सागर
जनता पहिया के चक्कर
बिला टिकट पाकिस्तानी
मांगे नहीं मिले पानी।

सन्मुख रूस कहे मुँह तोड़
भुट्टो खून खराबी छोड़
दुनियाँ तुझे कहे काफिर
मियाँ की हरकत मियाँ के सिर।

● कैलाश नाथ मिश्र

लक्ष्मण-रेख पार मत आना

आज मनुजता की छाती पर तूने गहरा वार किया है!
ओ यहिया मक्कार, मुझे तूने इतना लाचार किया है!!

यह वह देश जहाँ गङ्गा-सी, पावन सरिता बहती,
और, मनुज की श्वांस-श्वांस में, निज पवित्रता भरती!
यह वह देश जहाँ सागर-सी, गहराई हर उर में,
भरे हुए अनमोल रत्न हैं, मणि-माणिक घर-घर में!
जन-धन की इस अक्षय-निधि पर, कुत्सित-नीच प्रहार किया है!
विषधर की बाँबी से तूने, अनजाने ही रार किया है!!
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया-है!

इसकी सजा मिलेगी तुमको, ओ यहिया, यह भूल न जाना,
अपनी पल्टनियाँ ताकत पर, फूल-फूल कर फूल न जाना।
होता क्या आनन्द युद्ध का, अभी कहाँ है तूने जाना,
अभी अभी तो यही कहा है, 'लक्ष्मण-रेख' पार मत आना।
ओ यहिया वंचक! तूने, कलुषित-कृतघ्न व्यवहार किया है!
बैठे-बैठे नर सिंहों से, खेल-खेल खिलवार किया है!!
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया है!

अभी-अभी तो मैंने केवल, सुन ले 'धनु-टकार' किया है,
लगा बिगड़ने होश अभी से, बे-अख्तियार मियां है।
भागे तुम संयुक्त-राष्ट्र को, शरण न वह भी दे पाया है,
कागज की नैया को कोई, कब तक जल में खे पाया है!
डूब रही है नाव तुम्हारी, नहीं अभी तक होश किया है!
शेरों की मादों मे रहकर, कहो कभी भी स्यार जिया है!!
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया है!

यह वह देश, जहाँ दिग्विजयी चन्द्रगुप्त सम्राट मौर्य था,
किया चूर था, शूर सिकन्दर, जिसका जग में अमित शौर्य था !
सोलह बार मुहम्मद-गोरी, के प्राणों को भी बख्शा था,
पृथ्वीराज चौहान यहीं का, इसी भूमि पर ही जन्मा था !
सत्य, धर्म के हेतु यहाँ, वीरों ने निज बलिदान किया है !!
विश्व-शान्ति के मंदिर पर, तूने अति कुटिल प्रहार किया है !
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया है !

यह वह देश, जहाँ भारत था नर शेरों से खेला था,
वीर प्रताप शिवा नर-नाहर, से वीरों का मेला था !
सोलह-वर्षों के बालक ने, 'चक्रव्यूह, को तोड़ा था—
जो कुछ अब तक देखा यहिया, अभी बहुत ही थोड़ा था !
ऐसे रण-केशरी देश पर, तूने कटु-आघात किया है !
शकुन्तला के पुत्र 'भरत' की धरती को नापाक किया है !!
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया है !

धर्म और ईमान कभी का, बेच दिया तूने 'अमरीका',
अनाचार, अन्याय, जुल्म का, रंग चढ़ाया 'चीनों' फीका।
मस्जिद, गिरजे की दीवारें, तेरे मुँह पर थूक रही है,
निरपराध जनता, अबलाओं, की चीत्कारें हूक रही है !
वार निहत्थों पर ही करना, क्या 'इस्लामी' धर्म रहा है ?
भाई पर तलवार चलाना, किस 'कुरान' का कर्म रहा है ?
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया है !

यह वह देश, जहाँ रण में, जय बोली जाती है किसान की,
और यहाँ के खेत-खेत में, बोली जाती जय जवान की !
ध्वस्त हो गए टैंक तुम्हारे, टूट गया है रण-सब्यूहन !
जान गया है बच्चा-बच्चा, 'तेरे चक्रव्यूह' का भेदन;
केवल चौदह दिन में हमने, 'बंग-देश' को जन्म दिया है !

और युगों के लिए शोश, अत्याचारी का कुचल दिया है !!
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया है !

यह वह देश, जहाँ हिमगिरि-सा, धवल मुकुट है शोभित,
तीन ओर से जिसे जलधि भी, किये हुए आवेष्टित !
यह वह देश, जहाँ केशर की, घाटी भरी महकती,
जन-गण-मन में युद्ध, प्रेम, उन्माद, रोष है भरती !
इसी धरा पर ऋषि-दधीचि ने पौरुषेय-अवतार लिया है !
पाक-विनाश अवश्यम्भावी, मैंने यह स्वीकार लिया है !!
आज मनुजता की छाती पर, तूने गहरा वार किया है !

● कृष्णवल्लभ पाण्डेय

क्रान्ति के बढ़ते चरण

स्वर्णिम वङ्ग-देश में
दानवी-अनीतियों का हुआ नग्न-नृत्य,
एकतंत्र के कुटिल-वेश में,
मारे गये बुद्धिजीवी-श्रमजीवी धनी-भृत्य !

हत्या की शृङ्खला में
बिधे खेत-खलिहान, वन, ग्राम औ' नगर,
शोणित की अर्गला मे
डूबे शान्ति-सुख-गति-उन्नति के सौम्य-स्वर !

स्वार्थी-राष्ट्र मौन रहे,
देते रहे राक्षस को नये-नये अस्त्र-शस्त्र,
हत्यारे हिंसा मे सतत बहे,
विश्व ने देखा उन्हें क्रूर-रूप में विवस्त्र !

शरणार्थी लक्ष-लक्ष
प्राण-रक्षा हेतु आये भारत की गोद में,
इन्दिरा बढ़ी समक्ष
मानव को शरण, मरण दानव को दिया मोद में !

● चन्द्रभूषण त्रिवेदी
'रमई काका'

आज तुम्हारा अभिनन्दन है

हे आजादी के दीवानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
बंगला धरती के अरमानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
हे भारत के वीर-जवानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
युद्ध-उदधि के हे तूफानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है ।।

रक्त सिक्त विजयी मैदानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
तोपों के अनचूक निशानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
शत्रु-पोत ध्वसंक जलयानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
सैबर-भंजक नेट-विमानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है ।।

बंगला के खेतों-खलिहानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
बंगला के मजदूर-किसानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
रुचिर-चाय के हे बागानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
जूट और बगला के धानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है ।।

मुक्त-पवन के मुक्त-तरानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
मुक्त-धरा के गौरव-गानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
मुक्त-गगन जगमग द्युतिमानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
सागर की उत्तुङ्ग उठानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है ।।

सेना के हे सफल प्रयाणों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
बंगला के विजयी ध्वजवानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
बलवेदी के हे बलिदानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
बंग-बंधु के जय-अभियानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है ।।

बस्ती के घायल वीरानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
नए राष्ट्र के नए विधानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
माटी की अभिनव मुस्कानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
बंगला के भावी निर्माणों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है ।।

मुक्तिवाहिनी

कुर्बानो के हे अफसानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
मिटे हुए सिन्दूर-निशानों, आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
चूड़ी के टूटे-अरमानों, हे आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
मातृहीन शिशुओं के प्राणो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है॥

मंदिर-मदिर के भगवानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
मस्जिद की आजाद अजानो,आज तुम्हारा अभिनन्दन है।
मिल्लत के हामी इन्सानो, आज तुम्हारा अभिनन्दन है,
एक खुदा की सब सन्तानो, आज तुम्हारा अभिनंदन है॥

● चन्द्रसेन 'विराट'

आह, अधरों पर न हो

टूट मत मेरे हृदय,
मुरा न हो मेरे मलिन
और थोड़े दिन !

रात का है प्रात निश्चित,
अस्त का है उदय
एक जैसा ही किसी का
कब रहा है समय ।

रह न पाए दिन सरल
क्या रहेंगे ये कठिन
और थोड़े दिन !!

ढले कंधे, झुकी ग्रीवा
और खाली हाथ
किन्तु चौखट पर दुःखों की
टेकना मत माथ

आह अधरों पर न हो
मत पलक पर ला तुहिन !
और थोड़े दिन !!

प्रण न हो मेरे पराजित,
हार मत विश्वास,
कुछ दिनों का और संकट
कुछ दिनों संत्रास

किस्त अंतिम स्वेद की
तू चुका कर हो उऋण
और थोड़े दिन !

सृजन से थककर न रचना
तोड़ना संकल्प
शेष तेरे अभावों की
आयु है अब अल्प

थो. ड़ी मत भूलना
कल्पनाओं के हरिण,
और थोड़े दिन !!

● डा॰ जयनाथ 'नलिन'

हिमगिरि का अभिषेक

हिमगिरि-शिखरों का
होगा अभिषेक, शत्रु-शोणित की धारों से।
तुहिन-किरीट मेरे भारत का
शोभेगा रक्त-हेम हीरकों के हारों से।
भारत विशाल नया निर्मित हो,
सद्य शत्रु-शोणित में पागी-तलवारों से;
कपट-युद्ध हमने न जाना कभी
सीखा है हमने नहीं
गैरों की सीमा में लहू बरसाना कभी!
लेकिन कुचाली-मित्र, कपटी-पड़ोसी जो
छल से करेगा अभियान क्रूर तस्कर-सा
होगा कालकूट-सनी किरचों का
शीघ्र ही निशाना वह।
बचकर हमारी क्रोध-ज्वाला से
पायेगा न रुद्र के भी घर मे ठिकाना वह।

● ● ●

मानव की बात ही क्या,
दानव की देव की बिसात ही क्या?
विष्णु से, शंकर भयंकर से
भैरव-से काल, महाकाल से भी
प्रलय की ज्वाला विकराल से भी
युद्ध में कभी न मुख मोड़ा है, न मोड़ेंगे।

मेरी धर्म-धरती पर रक्त जो बहायेगा,
ऐसे दुष्ट-दुश्मनों के दर्प-दांत तोड़ेंगे;
ऐसे आततायी-अनाचारियों की,
भारत एक भी निशानी नहीं छोड़ेंगे।

• • •

याद रहे, चन्द्रगुप्त, विक्रम उठेंगे जाग,
अर्जुन, प्रताप, भीम, पर्वत-पाषाणों से।
छत्रसाल, बन्दा बैरागी, शिवाजी, गोविन्दसिंह,
लाख-लाख उपजेंगे, खेतों-खलिहानों से;
वे ना डरे हैं कभी, और न डरेंगे कभी
खूनी, क्रूर, कपटी, हैवानों-शैतानों से,
पोषते हैं जन्म-भूमि गौरव जो
नित्य कोटि-कोटि बलिदानों से।

डा० जयनाथ 'नलिन'

बलिदान-बेला

जन्म-भूमि पर मर-मिटने की आई आज अचानक वेला।

लगी कौंधने बिजली-सी बेताब जवानी,
लगा खौलने सोई-संगीनों का पानी।
मचल पड़ी टोली पर टोली,
ये निर्मोही खेलेंगे लोहू से होली;
कितना शोणित तुझे चाहिये
बोल बोल बेदर्द भवानी।

आज लगा तेरे आंगन में, अनगिन बलिदानों का मेला !!

डगर-डगर में, घर-घर में पिट रही मनादी
गाँव-गाँव से, नगर-नगर से,
प्रासादों, झोपड़ियों, हाटों से, घर-घर से;
निकल पड़े हैं अलबेले सिंहों के छौने।
घुस आए हैं टिड्डी-दल से, जो छल-बल से
ये कपटी विश्वास-विघाती,
है आतंक अनीति कपट-छल जिनकी थाती,
टिक न सकेंगे ये दुश्मन-मेहमान घिनौने।
उमड़ रहे खेतों-बागों से, तीखे वीर युवक फौलादी।

दुश्मन-दल-मर्दन कर देगा, माँ का बांका लाल अकेला।

नववधुएँ दे रही कुंकमों की कुर्बानी,
सजल नयन बहनें कहती हैं, इस राखी की

मुक्तिवाहिनी

● दिनकर सोनवलकर

स्वाधीन निर्णय का गोवर्धन

अन्यायी बादलों की गड़गड़ाहट
तानाशाही बिजली की दर्पभरी
चमक
और गोलियों की घनघोर
बरसात में भी
शान से खड़े रहते है
वे सब सीना ताने
जिनकी जड़ें
बहुत-बहुत गहरी है—
सस्कृति के खेतों
भाषा के वटवृक्षों में ।
और
उनमें से ही कोई एक
उठा लेता है
"स्वाधीन·निर्णय का गोवर्धन"
कभी कृष्ण
कभी मुजीब बनकर।
इन्द्र हो या कंस
या कालिया नाग
सबके आगे वे रहते है
अपराजेय।
रवीन्द्र के गीतों में
भर उठी है
गीता के अनुष्टुप की आग
"स्वधर्मे
निधनं
श्रेयः"

मुक्तिवाहिनी

• दिनकर सोनवलकर

कृतज्ञता पंचशील

आकाश,
तुमने दिया है शब्द
देश की जय बोलकर
करूँगा सार्थक!

वायु,
तुमने दी है साँसें
समर्पित करूँगा
मातृभूमि के लिये!!

अग्नि,
तुमने दी है दृष्टि
पहचानता रहूँगा
शत्रु को!!!

जल,
तुमने दिया है रस
खींचता रहूँगा
स्वधीनता-वृक्ष को!!!!

धरती,
तूने दी है यह देह
तेरी ही खातिर
मिटाऊँगा इसे!!!!!

⊙

● देवी प्रसाद 'राही'

ज्वालामुखी निगाहों में

सीमा पर है, खामोश खड़ा
कुछ मतलब से ही, अंधियारा
मत सोंच कि बारूदी-बादल,
छट गये, आ गया उजियारा।

मत सोंच कि तेरे छाजन पर
चमका, पूनम वाला चन्दा,
मत सोंच उजाला पाख हुआ-
कट गया अंधेरे का फंदा।

मत सोंच चांदनी लाई है
बेदागी किरनों का चन्दन,
मत सोंच कि भाई चारे का-
होने वाला है अभिनन्दन।

चांदनी नहीं, ये तो है रे!
सैनिक छलनाओं की माया,
कुण्डली मार कर बैठी है-
सीमा पर विषधर की काया।

अंबर के रक्त वर्ण-पीले-नीले
तारों का राज समझ,
उड़ते इस्पाती पंछी की,
कुछ भेदभरी आवाज समझ।

ये टैंक मशीनें-संगीनें,
भारी-भरकम, फौजी घेरा,
ये बारूदी दुर्गन्ध, घृणा-
के ठेकेदारों का डेरा।।

मुक्तिवाहिनी

दिन की रातों का गर्म-धुआँ
नदियों का रक्त-भरा मुखड़ा
ये टूटी-बिखरी घाटियों की-
लपटों-जंगलों का दुखड़ा ॥

खेतों-खलिहानों की छाती पर
फौजी बूटों की टोली,
ये खुले-आम बयारी फसलों-
की, अस्मत की जलती होली ॥

ये खून पसीने से लथ-पथ
मानवता की शोषित मांगें,
बारूदी गंधों में डूबी-
ये, नंगी-अधनंगी मांगें ।

बावरे! धारणा के पहले
इनकी भाषा का अर्थ समझ,
दुश्मन की गति का यह विराम-
है अर्थ भरा, मत व्यर्थ समझ ॥

मत सोच नये गननायक में
पश्चातापों की आग भरी,
अन्तर की आत्म शुद्धि-वाली-
अपराध निरोधक, लाज भरी ॥

ये अवसरवादी नैतिकता
बगुला भगती का परिचय है,
भीतर की कलुषित लिप्सा का-
केवल मायावी अभिनय है ॥

ये छिछले भाषण टकसाली
समझौते का गोरखधन्धा,
लो फिर गिरगिट ने रंग बदला-
दुनिया को करने को अन्धा ॥

ये कूटनीति, ये दाव-पेंच
सीमा पर, सैनिक मक्कारी,
भेड़िया कर रहा है मानो-
ऊँची छलांग की तैयारी ॥

अपशकुन भरी बिजली चमकी,
हिंसा के दानव ने तुमको
फिर पहली सी भेजी धमकी ।।

ये गरज-गरज गाली-गलौज
पागल सैनिक अधिनायक की,
सत्ता के रंगमंच पर फिर-
ये उछल-कूद खलनायक की ।।

और उधर हिन्द के सागर में
अमरीकी बेड़े की हलचल,
कैसे कह दूं, छूट गये सभी-
युद्धों के अपराधी बादल ।।

भारत के प्रहरी ! सावधान
यह कठिन समय की बेला है,
तेरी सीमा पर लगा हुआ-
शस्त्रों का भारी मेला है ।।

सम्भव है, दुश्मन फिर छेड़े
तेरे पौरुष की क्षमता को
पचपन करोड़ के हृदयों में-
बैठी स्वदेश की ममता को ।।

इसलिये वक्ष की छाती कर
फौलाद ढाल ले, बाहों में,
ले सांसों में तूफान सुला-
ओ ज्वालामुखी निगाहों में ।।

दुश्मन यदि रण की बात करे
तो भुजा उठाकर, वार तोल,
भाई चारे की बात करे-
तो समझौते का द्वार खोल ।।

● देवी शरण मिश्र 'देश'

हम तरफदार हैं इंसाफ के

सर कटाते हैं मगर सर को झुकाते हैं नही।
नौजवां शाने वतन, आन गँवाते हैं नही॥
अपनी ताकत पे हमेशा हैं भरोसा रखते,
जगे मैदा मे कभी पीठ दिखाते हैं नही।
कोहे आफत से हैं घबराते नही, लडते है,
काम करते हैं सही, बात बनाते हैं नही।
रूठ जाए जो कोई करते नही परवाह है,
अपने वादो से कभी मुँह को छुपाते है नही॥
हर पड़ोसी के लिए दिल मे जगह रखते हैं,
प्यार करते हैं, कभी आंख दिखाते है नही।
लेते इमदाद बिला शर्त कोई देता है,
अपने मतलब के लिये दुम तो हिलाते है नही॥
हम तरफदार है इन्साफ के दुनियां भर मे,
दोनो मजहब की कभी बात चलाते है नही।
घर मे कितना ही लडे हिन्दू-मुसलमां लेकिन
करते फरियाद नही, गैर बुलाते है नही॥
रहजनी करके कोई बनता मुजा ही लेकिन,
हम उसूलो को कभी भेंट चढाते है नही।
सर पे आ जाए तो भिड़ जाते है शैता से भी,
पहले दुश्मन पे कभी हाथ उठाते है नही॥
खूब मालूम हमे यहिया क्या ये ? भुट्टो क्या है ?
हम कभी वैसी मगर डींग सुनाते है नही।

• देवी शरण मिश्र 'देश'

मेरे गीत उन्हीं को अर्पित

मेरे गीत उन्हीं को अर्पित,
जो स्वतन्त्रता के स्नेही हैं
जिन्हें भारती पर गुमान है
जिन्हें हिमालय की गुरुता, दृढ़ता प्यारी है
जिन्हें जाह्नवी-यमुना-ब्रह्मपुत्र-गोदावरी पवित्रतमा है
हिन्दोदधि की गहराई का जिन्हें पता है;
काश्मीर की केसर जिनके हृदय बसी है,
मनु कुमारी अन्तरीप से जो मोहित है,
पुण्य बंग-पंजाब-हेतु,
जिनका तन-मन-धन सहज समर्पित।
मेरे गीत उन्हीं को अर्पित॥
जो गौतम की सत्य-अहिंसा के प्रेमी हैं
जो गांधी के विश्व-प्रेम के नित-नेमी हैं,
है जिनको विश्वास अडिग उस विश्व-शांति पर
पंचशील पर;
जो नेहरू की स्नायु-स्नायु के
रक्त-कणों से सिंचित-पोषित।
मेरे गीत उन्हीं को अर्पित॥
जिनकी भाषा के केवल आधार वेद हैं,
जिनके करते छंद विभीषण के प्रसंग पर
महत् खेद है

जिनके स्वर भारत की राधा को प्यारे हैं
जिनके पद जन-गण-मन नयनों के तारे हैं;
रामचरित से जिनके भाव रहे मर्यादित !
मेरे गीत उन्ही को अर्पित ।।
प्रेय जिन्हें, वह अर्थ-नीति
जो जन-जन सुखकर
ध्येय जिन्हें, वह राजनीति
जो लोक-शोक-हर
हो जिनके भुजदण्ड पराक्रम
श्रम से निर्मित !
मेरे गीत उन्ही को अर्पित !!
युवक, कि जिसका सिर प्रताप-सा अविनत उन्नत
बाल, कि गुरु गोविंद सिंह-सुत से हो
अविजित,
वृद्ध, भीष्म-सा भैरव
रण-रिपु-दल-मद-गाजन
औ, कलत्र ! दुर्गा-लक्ष्मी-सी
दानव-द्रोह-विभंजन;
देश-भक्ति जिनके सुकर्म से हो सम्पादित,
मेरे गीत उन्ही को अर्पित !!

• [illegible]

सूर्य-रथ

[illegible]
[illegible]
किन्तु उनके सूर्य का रथ बढ़ गया [illegible]
कुहासों से बहुत [illegible] हुआ ह सूर्य की [illegible]-
[illegible] को अपने आगोश में।
तब तुम्हें अभिमन्यु का था
किन्तु अब अभिमन्यु तुम व्यूह-भेदन जानता है
इसलिए जिस ओर उसका रास्ता
दिखला दिया है
सारा अंधकार की गहन [illegible] [illegible]
पर्त होकर जम गयी है,
भारती की सात्विकी रथ सारथी
जिसमें पराक्रम हो गया साकार—
भारत भूमि के हर नागरिक का,
आज उसका देश-भर कौशल अनोखा
[illegible] रह गये अणु के पुजारी का पुरुष से
नग्न, भूखी-वेदनाओं से प्रसित मृतप्राय औ, असहाय-
किन्तु अपने कर्म की सच्ची पुजारिन मनुजता ने—
झोंक दी है धूल पाखंडी मुखों में,
जो दिशा-वाहक बने
जनतंत्र के
नव-क्रान्ति के

इस्लाम के,
मुँह सिये तकते रहे लज्जा उतरती द्रौपदी की
किन्तु चौदह दिन मना त्योहार बलि का
अब सुनहरी-भूमि पर तिरता मिलन संगीत
डबडबायी खेतियों में हास्य-रेखा खिंच गयी है
हर सरित का खौलता जल स्नेह जीवन बन चुका है,
सीकचों मे बन्द पंछी व्योम मे स्वछंद फिरते,
शान्ति का अनुपम मसीहा अभय करता कर उठाकर
लिख दिया बारूद ने अपनी कलम से
शक्तिशाली प्रीति, अणु-आयुध नहीं हैं।

● कुमारी नवलता

जय का टीका

भ्रमित पथिक को सदा रेणुका ने ही दिया सहारा है,
तापमयी रवि की किरणों ने उषा-स्वरूप संवारा है।

महाशक्ति ने सदा शान्ति का तोरण-द्वार सजाया है,
आह्वानों ने सोयी कलिकाओं को सदा जगाया है॥

जब-जब कोमलता में कंटक अवरोधक बन कर आये,
उसके अधर शिला-सम अविचल होकर प्रतिपल मुसकाये।

वीर उरों में कायरता के लिए कहीं स्थान नहीं,
संघर्षों ने किया गुञ्जरित किसका गौरव गान नहीं॥

जीवन को संघर्ष समझ कर जो भी प्रतिपल मुस्काया,
मानवता के लिए शक्ति का वरद हस्त जिसने पाया।

मस्तक पर उसने ही जय का टीका सदा लगाया है,
जीवित वही सदा संघर्षों को जिसने अपनाया है॥

क्रान्ति-शृंखला सरोप

नवल-नगरन हाथ में प्रकाश की शिखा लिये,
प्रखर-प्रदीप्त-रश्मियाँ प्रभा प्रसारती रहीं।
प्रशान्त-सिन्धु में अनन्त में स्वय विलीन हो,
सदा मुखर चेतनामयी तरग बन रही।
वही अमन्द-रश्मियाँ नितान्त विस्मृता बनी,
अखण्ड मातृभूमि को प्रकाशमान कर गयी।
न किन्तु सञ्चिता धवल प्रकाश युक्त रश्मियाँ,
घनान्धकार में विलीन आज जगमगा रही॥
कर्णधार देश के ध्वजा लिये बिगुल बजा,
सुप्त शान्तिमार्ग मे तूर्यनाद कर चले।
तापमय किरन बनी कभी कठोर साधना,
परन्तु आज तो वही प्रतप्त प्राण कर रही॥
पुष्प की सुगन्ध से गूँजती दिशा रही,
किन्तु वे मुकुल कली उषा के साथ सो गयी।
शान्ति की कली अभी खिली न दिव्य देश मे,
क्रान्ति-शृंखला सरोप आज झनझना रही॥
आज हम अगार बन, भस्म राग-द्वेष कर,
फिर नये प्रकाश से एकतामयी लहर—
भरे विशाल देश मे, सुहास युक्त भारती—
पुण्य-काल में यही पुण्यगीत गा रही॥

● कु० निर्मल कुमारी

विजयवाहिनी वरण करो !

युद्ध लिया है जीत, शांति का, विजयवाहिनी वरण करो !
मातृभूमि की रक्षा के हित, अचल-शौर्य्य के चरण धरो !!

यह स्वर्णिम-इतिहास लिख दिया तुमने निज बलिदान से,
हिमगिरि का मस्तक कुछ ऊँचा और हुआ है शान से।
तुमने अपनी दृढ़ता, क्षमता, साहस को है चमकाया;
गूँज रहा है सारा भारत, 'जय बगला' के गान से ।।

एक चुनौती खत्म हुई है, कई चुनौती शेष हैं;
दीन, दुःखी, पीड़ित, संतापित-मनुजों का दुःख हरण करो !
युद्ध लिया है जीत, शांति का विजयवाहिनी वरण करो !!

भारत का नेतृत्व तुम्हारे सुख-सपनों के साथ है,
जन-जीवन का सुदृढ़-तपोबल तुम्हे झुकाता माथ है।
तुम गरिमा प्यारे स्वदेश की, तुम 'शिव' की पहचान हो,
जनता तन से, मन से, धन से सदा तुम्हारे साथ है ।।

रोक दिया पशुता का बल तुमने तीक्ष्ण-प्रहार से,
क्षमा-प्रार्थी जो सन्मुख है, अभय-दान दो, शरण करो !
युद्ध लिया है जीत, शांति का विजयवाहिनी वरण करो !!

दिशा-दिशा मे गूँज रही है, गाथा सुयश सुनाम की,
दिग्दिगन्त तक पहुँच चुकी है, चर्चा भारत-धाम की।
गगन मस्त है, पवन मस्त है, मस्त धरा जल, तेज है;
न्याय-शांति के हित मे अब फिर होगी बातें काम की ।।

अग्नि-परीक्षा सफल रही है, अनचाहे अभियान की;
भय-बाधाओं के सागर, जो, आये उनमें तरण करो।
युद्ध लिया है जीत, शांति का विजयवाहिनी वरण करो !!

● निरंकार देव 'सेवक'

यह विजय

हथियारों की ही नही जीत यह है आदर्श विचारों की।

विध्वंसक अस्त्र लिए सैनिक
कितने भी हों मर जाते हैं,
लेकिन स्वाधीन विचारो को
वह कैद नही कर पाते हैं।

जनमत के आगे हार हुई तानाशाही-हत्यारों की।
हथियारों की ही नही जीत यह है आदर्श-विचारों की !!

जो देश-प्रेम का लक्ष्य लिए,
जीवन के पथ पर चलते हैं।
वह नही आग में जलते हैं,
वह नही बर्फ पर गलते हैं।

दासी रहती हर शक्ति सदा उनके ही मौन-इशारों की।
हथियारो की ही नही जीत यह है आदर्श-विचारों की !!

आदर्श विचारो की खेती,
जिन देशो मे होती रहती।
अनमोल आत्म निर्भरता के
मोती जनता बोती रहती।

उनको न जरूरत होती है दुनिया के और सहारो की !
हथियारो की ही नही जीत यह है आदर्श-विचारों की !!

● निरंकार देव सेवक

यह युद्ध

यह युद्ध बुद्धि का है साथी ! लड़ते जाओ, बढ़ते जाओ

जो धूल बुद्धि पर जमी हुई
सदियों से बहुत पुरानी है,
खुद अपने ही हाथों से वह
सब तुमको झाड़ गिरानी है।

जो तेज सूर्य को धुँधला दे वह तुम अपने मुख पर लाओ !
यह युद्ध बुद्धि का है साथी ! लड़ते जाओ, बढ़ते जाओ !!

अपना तन-मन-धन-जन-बल सब
संतुलित सुरक्षित रखना है,
घर में हो या बाहर अपने
दुश्मन की चाल परखना है।

एकता आत्म-निर्भरता का संकल्प लिए आगे आओ !
यह युद्ध बुद्धि का है साथी ! लड़ते जाओ, बढ़ते जाओ !!

मानव के प्रति मानवता का
सदज्ञान नहीं मर सकता है
इन विध्वंसक-हथियारों से
इन्सान नहीं मर सकता है।

सद्‌बुद्धि उन्हें भी दो तुम जो यह है भुट्टो, निक्सन, माओ
यह युद्ध बुद्धि का है साथी ! लड़ते जाओ, बढ़ते जाओ।

निरंकार देव 'सेवक'

ओ वीर देश के सैनिकवर

ओ वीर देश के सैनिकवर,
हम सब हैं तेरे साथ-साथ!

मत समझ देश के दुश्मन से, रण में लड़ रहा अकेला तू,
मत समझ देश की रक्षा में, आगे बढ़ रहा अकेला तू!
कंचनगंगा की चोटी से, कावेरी के सागर तट तक,
कितनी उत्सुक आशाओं के, दृग देख रहे तुझको अपलक!!

पुरखों की गुण-गौरव-गाथा,
जो झुका नहीं अब तक माथा,
पल-प्रतिपल हैं तेरे सहचर
ओ वीर देश के सैनिकवर!!

हम अपने तन-मन पेट काट, तुझको देंगे फल अन्न-वस्त्र,
हम अपने सारे शौक त्याग, तुझको देंगे सब अस्त्र-शस्त्र,
हम हर दुःख कष्ट सहर्ष झेल, सर्वस्व लुटायेंगे तुझ पर,
जब तक न तिरंगा लहरा दे, तू दुश्मन के गढ़ पर चढ़कर!!

तेरी जयकारों के स्वर पर,
हो हम सबका जीवन निर्भर
तू बढ़ता चल निर्भीक निडर,
ओ वीर देश के सैनिकवर।

तू एक मगर तुझमें बल है, पचपन करोड़ योधाओं का,
तेरे भुजदंडों में पौरुष अगणित सुगठित सेनाओं का!
तेरा गर्जन सुन काँप उठे, भूधर, मरु बन जाये सागर,
दुश्मन का दिल दहले, कर दे वह आत्म-समर्पण-घबराकर!!

तू लौटे होकर दिग्विजयी,
तू लौटे लेकर विजयश्री।
उत्सव हो नगर-नगर घर-घर
ओ वीर देश के सैनिकवर!!

• • •

● पारस 'भ्रमर'

मुक्ति का संघर्ष

अंधेरे से उजाले अब सहमते है न डरते हैं,
ग्रहण से मुक्ति का संघर्ष लाखो सूर्य करते है।
न पश्चिम से तिमिर का युद्ध पूरब हार सकता है,
उषा की आँख से शबनम नही, अंगार झरते हैं।

धरा की धूलि धारण कर वनें सन्यासियों जैसे,
सितारे व्योम के सिर से कफन बाँधें विचरते हैं।
लुटे हैं क्वांरियो के शील, सिंदूर हीन सधवाएँ,
न अब श्रृंगार होता है, न अब आँचल सँवरते हैं।

कहीं आँसू न पीने को, कहीं गम भी न खाने को,
भरी है खून से नदियाँ, अधर प्यासे तरसते है।।
जहाँ पर रोटियाँ हों शील से, सौंदर्य से महगी,
वहीं पर आग के, अंगार के अंकुर उभरते हैं।

करोगे जन्म का सम्बन्ध गहरा मृत्यु से कितना,
वतन की आबरू पर लोग मरकर भी न मरते है।
बुझाओ मानचित्रों पर धधकती वंग-रेखाएँ,
यहाँ ज्वालामुखी बनकर सदा बादल बरसते है।

घटा आँगन, गगन छप्पर महल है यह शहीदों का,
विजय के देवता इस द्वार पर आकर उतरते है।।

● पुरुषोत्तम 'मधुप'

दुश्मन बनी हवाएँ

दुश्मन बनी हवाएँ !

पहले कभी महकती थीं जो, अब तो धूल उड़ाएँ !

इनका रुख ही बदल गया है,

यह विरोध का रूप नया है;

धूल-बवंडर के झोकों से अन्धा हमें बनाएँ !

अब न रही इनमें शीतलता,

मन्द परस वाली कोमलता,

अब तो बगिया की खुशियों को ये बेदर्द जलाएँ !

उजड गये वे नीड़ सुहाने,

जहा कि रहते मीत पुराने,

निराधार आशा के पंछी कहाँ किधर अब जाएँ ?

अब तो फूल नही हँस पाते,

भँवरे भी निश्चिन्त न गाते,

पात-पात को सता रही हैं पतझर की शंकाएँ !

अब है मौसम इनका साथी,

इन्हे हर तरह की आजादी;

बेबस को उजाड़कर देखो अपना जश्न मनाएँ !

इनकी मस्ती इनका मौसम,

देखा मनमानी का आलम;

फूलों का श्रृङ्गार लूटकर, उन पर धूल चढ़ाएँ !

● पुरुषोत्तम 'मधुप'

दौरे-जुल्मात में

किसी की तरफ़ हो रहे देश सारे,
किसी का तरफ़दार कोई नहीं है।
उसी पर जुलम हो रहे हाय! जग में,
कि जिसका मददगार कोई नहीं है॥

हुकूमत का यह रौब! ताकत की गरमी!
ये बिगड़े हुए रुख उन्हीं बेबसों पर!
कि जो दौरे-जुल्मात में रह गये चुप,
किसी रहनुमाए-वतन को बुलाकर।

मुसीबत में दे दे सहारा जो मिलकर,
वो शायद मिलनसार कोई नहीं है।
लिये बोझ ग़मका कोई दब रहा है,
ख़ुशी से अकड़कर कोई तन रहा है।

किसी को रुलाकर कोई हँस रहा है,
किसी को मिटाकर कोई बन रहा है॥
गुनहगार से ही वफ़ा सब निभाते,
ख़ुदा का वफ़ादार कोई नहीं है।

ये झूठी नहीं बात सच कह रहा हूँ,
जो दुनियाँ का इतिहास दिखला रहा है।
जिसे मिल गईं ताक़तें हुक्मरानी,
वही बेबसों पर जुलम ढा रहा है॥

मगर निर्बलों के लिए मर सके जो,
वो ऐसा तो दमदार कोई नहीं है।

●

● प्रदीप शुक्ल

सो नहीं जाना पहरुए

शत्रुओं से घिर रही फिर आज सीमाएँ तुम्हारी—
सो नहीं जाना पहरुए, सो नहीं जाना।

शत्रु की लोलुप-निगाहों में बसा है,
यह धरा का स्वर्ग, माँ का दिव्य-गहना,
देश-रक्षा का अटल-संकल्प लेकर,
तुम सुरक्षा-चौकियों पर सजग रहना।

जग-विदित हैं वीरता की कोटि-गाथाएँ तुम्हारी,
आज फिर गौरव-भरा इतिहास दुहराना।

खिलखिलाता निर्झरों में, गीत गाना,
इन्द्रधनुषी-प्रकृति का रंगीन सपना,
मुस्कराता नित्य केसर-क्यारियों में,
जगमगाता मुकुट यह कश्मीर अपना।

छिन न जायें वाटिकाएँ और सरिताएँ तुम्हारी—
खुशनुमा डल झील दुश्मन से बचाना।

एकता के सूत्र में हम सब बंधे हैं,
इस तरफ से तुम कभी चिन्तित न होना,
अनवरत-साधन सभी उपलब्ध होंगे
खेत में हम सब उगाते आज सोना।

भेजती संदेश बहनें और माताएँ तुम्हारी—
रिपु-दलों के दुर्ग पल भर में ढहाना।

●

● प्रदीप शुक्ल

मुक्ति-प्रण को प्रणाम

बंगाल-बन्धु के अडिग मुक्ति-प्रण को प्रणाम!

वन्धन टूटे उन्मुक्त हुए सव दिग्-दिगन्त,
अन्याय और उत्पीड़न का हो गया अन्त;
वह जर्जर-पराधीनता का पतझर बीता-
बङ्गाल-जननि को मिला मुक्त-शाश्वत-वसंत।

शोणित-सिंचित-धरती के कण-कण को प्रणाम!

यह लोकतंत्र की विजय हुई मिट गये क्लेश,
रिपु का कोई भी चिह्न न अव रह जाय शेष;
अपनी भाषा अपनी संस्कृति का हो विकास-
सवके कंठों सेमुखरित हो "जय-जय स्वदेश।"

पावन-भू के बलिदानी जन-गण को प्रणाम!

वैसे तो चिर-प्राचीन किन्तु सम्वन्ध नये,
नव-निर्माणों के होंगे कुछ अनुवन्ध नये;
धर्मों के झूठे भेद-भाव से ऊपर उठ-
गूंजेंगे नभ में मानवता के छन्द नये।

इस अमर-मैत्री के पुनीत-क्षण को प्रणाम!

● प्रदीप शुक्ल

छब्बीस जनवरी

मैं वह तारीख कि जिस दिन पाया भारत ने
स्वाधीन देश का अपना नूतन संविधान,
भाषा, बोली या धर्म जाति का भेद नहीं
सब हैं स्वदेश के सेनानी, सब एक प्राण।

उत्तर के हिमगिरि से दक्षिण के सागर तक
पूरब-पश्चिम के एक सभी भारत-वासी,
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई भाई-भाई
हैं एक सभी मंदिर-मस्जिद, काबा-काशी।

सबका विचार, अभिव्यक्ति और विश्वास मुक्त
हर व्यक्ति न्याय पाने का सच्चा अधिकारी,
सबको उन्नति का है समान अवसर मिलता
यह जनमत का शासन जन-गण का हितकारी।

साम्राज्यवाद के स्वप्न धूल में लोट रहे
है गूँज रहा नव-निर्माणों का मूल-मंत्र,
शोषण, अन्याय, अनाचारों के दुर्ग ढहा
बढ़ रहा प्रगति-पथ पर भारत का प्रजातंत्र।

मुझको है यह विश्वास कि भारत की जनता
युग-युग तक अपना हर कर्तव्य निभायेगी,
'बापू का देश' को मुक्त कराया है जिसने
वह जग में मानवता की ज्योति जगायेगी।

पचपन करोड़ जन एक सूत्र में बँधे हुए
हर वर्ष हृदय से करते मेरा अभिनन्दन,
जिनके पौरुष के आगे पानी माँग रहा
नापाक पाक का दर्प भरा सैनिक शासन।

उगते सूरज की स्वर्ण-किरण के साथ-साथ
अपना-अपना संकल्प सभी दुहराते हैं,
अपने बलिदानी वीरों को श्रद्धांजलि दे-
उन्मुक्त गगन में राष्ट्र-ध्वजा फहराते हैं।

● प्रेम कुमारी ठाकुर

सुलग रहा अंगार हो

आज जरूरत है भारत को त्याग और बलिदानों की।
जन्मभूमि पर मिट-मिट जाएँ, ऐसे वीर जवानों की ॥

रक्त खौलता हो जिनका, अरु अन्तर में चिनगारी हो,
इंच-इंच धरती भी जिनको, प्राणों से भी प्यारी हो।
देश-द्रोह कुछ रहे न मन में, ना हो वह किंचित गद्दार,
नित्य कर सके मुण्डमाल से जो रणचण्डी का शृंगार ॥

मोह न हो निज तन का जिनको न ममता हो प्राणों की।
जन्मभूमि पर मिट-मिट जाएँ, ऐसे वीर जवानों की ॥

रोक सके न राहें जिनकी कुटिल शत्रु की गोलियाँ,
पर्वत भी झुक जाए उनके, जिधर बढ़े ये टोलियाँ।
फौलाद पिघलता बाहों में, वक्ष धधकता हो तूफान,
देश-प्रेम जागा हो मन में, अधरों पर हो राष्ट्र-गान।

शिवा-भगत से मतवालों की, अर्जुन के सपनों की ॥
जन्म भूमि पर मिट-मिट जाएँ, ऐसे वीर जवानों की।

मन में जिनके मातृभूमि का सच्चा-प्यार दुलार हो,
तन में जिनके प्रतिशोधों का सुलग रहा अंगार हो।
प्राणों को न्योछावर कर दें, जो पुरखों की शान में
रक्त, शक्ति, सर्वस्व दे सकें निज देश-शान-सम्मान में ॥

भामाशाह, दधीचि सरीखे, वीर कर्ण
जन्मभूमि पर मिट-मिट जाएँ, ऐसे

• पुलाकी राम वर्मा
'कविराम'

शृंगार मुंडमाली का

(१)

यह नानक की जनमास्थली है,
गुरु गोविन्द सिंह ने जीवन वारा !
साँगा की सीधी सिरोही रही,
महाराणा प्रताप ने शौर्य सँवारा।
ऐसे शिवा के स्वदेश का मैं,
हृदयंगम कैसे करूँ बटवारा।
हिन्द हृदय है, तो पाक शरीर है,
ये भी हमारा है, वो भी हमारा।

(२)

भारत माँ का कलेवर एक,
यही अब मान के जीना ही होगा।
फाट चुका पट बाँट मे तो इसे,
शौर्य सँवार के सीना ही होगा।
क्यों न इसे विष मानो अभी पै,
किसी दिन तो रस भीना ही होगा।
आज नही तो कभी न कभी ये,
हलाहल तो तुम्हे पीना ही होगा।

(३)

याद है हकीकत की तुम को कहानी अभी,
भूल क्या सकोगे शिशुओं का चुना जाना तुम।
नाचते दृगों में आज के भी है असह्य दृश्य,
जाने फिर ढूँढ़ते हो कौन सा बहाना तुम ।।

बूँद-बूँद रक्त का चुकाना प्रतिकार तुम्हें,
लगकर चूक के न पीछे पछताना तुम।
शीश से कृपाण न हटेगी शत्रुओं के, कहीं,
आज मातृ-भूमि की शपथ लेके जाना तुम ॥

(४)

चम-चम चोख के बढ़ा दो वाहिनी को बढ़,
दरदो दर्प दम्भ कुटिल-कुचाली का।
नोच-नोच फेंक दो निचोर शत्रुओं के शव,
भोज होगा रोज ओज कुपित कपाली का ॥
देगे शत्रु शोणित मे शिवा शकरी भी वहीं,
खप्पर न खाली रह जाये महारानी का।
छाँट-छाँट झुण्ड, काट-काट मुण्ड वैरियों के,
"कविराम" कर दो शृङ्गार मुण्डमाली का ॥

(५)

टेरता तुम्हें है, महाराणा का महान त्याग,
आओ मातृभूमि पै निसार तन-मन लो।
यद्यपि है शेष स्वाभिमान गुरु गोविंद का,
फिर एक बार बाँध शीश पै कफन लो ॥
तुम को तुम्हारे शिवराज की शपथ वीरो,
टूट पड़ो सिंह के समान जीत रन लो।
या तो काट-काट दो उतार शत्रुओं के शीश,
या तो "कविराम" लो ये चूड़ियाँ पहिन लो ॥

● बृजेन्द्र अवस्थी

शौर्य-गाथा

समरस्थल को चल पड़े वीर नेउता पाकर बलिदानों का।
अभिनन्दनीय है रणकौशल भारत के वीर-जवानों का॥
उस विंग कमान्डर ने अपना साहस न मीत हो छोड़ दिया।
बेजोड़ शौर्य ने नभ रण में अध्याय अनोखा जोड़ दिया॥
वह बम वर्षा के हेतु गया था जहाँ शत्रु का सैन्य भाग।
सहसा दुश्मन के गोले से उसके विमान में लगी आग॥
लग गयी आग फिर भी उसके उर का दृढ़ निश्चय टला नहीं।
जल उठा यान का पंख भले भावना पंख पर जला नहीं॥
उसने सोचा इस अवसर पर कुछ जौहर करना अच्छा है।
रिपु की धरती पर मरने से- भारत में मरना अच्छा है।
इतना आते-आते मन में मुड़ चला देश की सीमा को॥
सीमा का साहस लिए हुए उड़ चला देश की सीमा को।
जलते विक्रम का कीर्तिमान जलता विमान लेकर आया॥
फिर बीकानेरी धरती पर लपटों के बीच उतर आया॥
होली-सा धधका वह विमान रह गया काल जल्लाद बना।
वह वीर गर्व-सा जीवित है इस नवयुग का प्रहलाद बना॥
युग-युग तक भूल न पायेगा गौरव इन मृत्यु उड़ानों का।
अभिनन्दनीय है रण-कौशल भारत के वीर जवानों का॥
वह राजस्थानी बलिदानी बांका प्रवीर अलबेला था।
जो अपनी बूढ़ी माता का अवलम्बन एक अकेला था॥
उस माँ को था यह ज्ञान नहीं कर रही नियति अवहेला थी।
इस मार्च, ७२ में निश्चित उसके विवाह की बेला थी॥
लेकिन विवाह के न्योते से पहले रण का न्योता आया।
यों दूल्हा बनना छोड़ वीर रण दूल्हा बन रण में धाया॥
यों युद्धराग को हुआ राग उसकी उद्दीप्त जवानी से।
रणथल में ही हो गया ब्याह वीर का मौत की रानी से॥

बूढी जननी के पास गये अधिकारी देने समाचार।
बलिदान हेतु जो दिया गया वह लिये हाथ में पुरस्कार॥
केहरिणी मैइया गरज उठी यह पुरस्कार तुम ले जाओ।
उसके जो घायल साथी है उनको सहायता पहुँचाओ॥
वे वीर चुका लेगें खुद ही उसकी कुर्बानी का बदला।
धन से न चुकाया जा सकता मेरे बलिदानी का बदला॥
चण्डिका स्वय यश गाती है ऐसे जवान बलिदान का।
अभिनन्दनीय है रण-कौशल भारत के वीर जवानों का॥
वे वीर धन्य है रिपुओ की छाती पर चढ जाने वाले।
चौदह हजार फुट ऊँचे की चौकिया छीन लाने वाले॥
ऐसे हँसमुख कुमार अपनी माता का गर्व बढाते हैं।
जो एक साथ दो-दो मिराज नेट द्वारा मार गिराते है॥
तोपची चावले घाव लिये वह पेश नमूना करता है।
जितने रिपु के सैबर आते गोलो से भूना करता है॥
जगजीत नदी का वक्षचीर गोलिया पार से लाता है।
दस शत्रु मार रिपु चौकी पर अपना अधिकार जमाता है॥
घायल कौलर जब अस्पताल मे मूर्छा त्याग जागता है।
फौरन रणथल मे जाने का फिर से आदेश मांगता है॥
वह केशवराम धन्य जिसकी करनी मे ऊंचा हुआ माथ।
जो चला उड़ाने रिपु बकर उड गया उसी का एक हाथ॥
पर आगे बढता गया वीर पल भर भी लक्ष्य नही मोडा।
बम-बकर मध्य छोडने का उसने अरमान नही छोड़ा॥
रिपुओं के चिथड़े उछल उठे ढह गया शत्रुओ का बकर।
बायें कर से बम डाल दिया कहकर हर-हर बम शकर॥
उन नभ-बहादुरो का वदन जल-थल बहादुरो का वदन।
जो पाँच-पाँच सैफे तोडे उन मल-बहादुरो का वदन॥
यह जननी के दीवाने है, है शौर्य यही दीवानो का।
अभिनन्दनीय है रणकौशल भारत के वीर जवानो का॥

● गीतकार वृजेन्द्र

तीन छक्के

याहियाखाँ को पकड़कर लाओ प्यारे लाल।
मेरे तवले पर मढो इस पाजी की खाल ।।
इस पाजी की खाल ताल दूँ ता-ता धिन्ना।
आसमान से घूर-घूर खिसियाये जिन्ना ।।
कह वृजेन्द्र बेजोड़ और ले खोद खाईयाँ।
निकला पूत कपूत लजाता दूध काईयाँ ।।

माऊ निक्सन से कहें देख पाक का हाल !
अब न यहाँ गल पाएगी प्यारे अपनी दाल ।।
प्यारे अपनी दाल, दोस्ती नादानी की।
पता चल गई चाल पाक कारिस्तानी की ।।
कह ब्रजेन्द्र बेजोड़ रो रहे दोनो ताऊ।
देख पाक का हाल कहें निक्सन से माऊ ।।

गोली तेरी गल गई फिस्स् हो गये बम्ब।
अब भारत के हाथ में नाच रहा है छम्ब ।।
नाच रहा है छम्ब हवाये गायें लोरियाँ।
नचा रहे अरिमुण्ड हाथ आ गया जोरियाँ ।।
कह ब्रजेन्द्र बेजोड आँख अम्बे ने खोली।
फिस्स् हो गये बम्ब, गल गई तेरी गोली ।।

• गीतकार वृजेन्द्र

चार मुक्के

झेलम के जल पै यारो अब होगा कम्पटीशन,
जो भारतीय सैनिक डुबायेगा अधिक दुश्मन।
उसको बनाया जायेगा गवर्नर सिंध का,
करांची में जाके होगा प्राइज का डिस्ट्रीब्यूशन।

चींटे के भी यारो अब निकलने लगे हैं पर,
कितना है जल्दबाज और कितना है बेसबर।
लड़ने का है शऊर नहीं बदतमीज को,
लड़ने को आ रहा है पायजामा पहनकर।

याहिया तेरी कबर पर तापूंगा मैं अब कंडा,
भूनूंगा उस पर भुट्टो, उबालूंगा मैं अब अंडा।
टिक्का का सफाया करूं टिक्के की माचिस से,
तेरे सर पै ठोक दूंगा बांगला देश का झंडा।

आंखें निकल पड़ेंगी, मैं ऐसी चपेड़ दूंगा,
मैं तेरी उस जुबां को खूं में लथेड़ दूंगा।
मक्कार कहा मा को तेरे टुकड़े-टुकड़े करके,
गिद्धों को खिला दूंगा तेरा बखिया उधेड़ दूंगा।।

● ब्रजवल्लभ पाण्डेय
'ब्रजेन्द्र'

जय भारत : जय बंगला

कान खोलकर सुन लो यहिया, भुट्टो, नुरुल, टिक्का!
हर मौके पर खरा उतरता, भारत का हर सिक्का!!
देखा दुनिया ने कि खरा है, भारत-देश का पानी;
जोश-खरोश शक्ति-साहस से, है परिपूर्ण जवानी॥
चरण चूमती सदा सफलता, पौरुष भरता पानी;
क्यों न विजय हो जब कि हमारा दीक्षित हर सेनानी!
बन्द हुई है अभी न सीमा पर खतरे की घण्टी,
देश सुरक्षित रखने की है, हम सब की गारण्टी!!
धर्म, जाति या सम्प्रदाय का अन्तर सभी मिटाओ,
हिलमिलकर अब एक तना से एक राग ही गाओ!
देखो आज प्रकृति ने भी है बदला अपना बाना,
उससे भी स्वदेश-रक्षा-हित अपना शर सन्धाना!!
कण-कण में है राष्ट्र-प्रेम की दृढ़-भावना समायी,
बाँध बसन्ती-पाग-राग से निकले सरसों राई।
गेहूँ-जौ भी खड़े खेत में, भाले तीक्ष्ण सम्भाले
सेम-मटर-अरहर भी साजे कारतूस मतवाले!!
दिन-दिन पर दिन में दिनकर, जन-जन में गर्मी लाता,
और मगन हो गगन-रात भर, नित मोती बरसाता।
'राष्ट्र-सुरक्षा कोष' पूर्ति हित है उत्साह न मन्दा,
पुलक-पुलक सोल्लास रजनि भी साजे नियमित चन्दा!!
स्वतंत्रता की रक्षा करना है कर्त्तव्य हमारा

और शरण देना शरणागत को है धर्म हमारा!
अधिकारों के साथ-साथ ही कर्त्तव्यों का पालन
जब होता है, तभी राष्ट्र का होता दृढ संचालन!!
कर्म करो यह कर्म-क्षेत्र है, भूलो धर्म न अपना,
तभी सत्य होगा 'बापू' के राम-राज्य का सपना!
अब जीवन भर हटे न पीछे बढ़ा कदम दो अगला;
देवि इन्दिरे! जय मुजीब!! जय-जय भारत! जय बंगला!!

उलझन है कुछ, किन्तु तुम्हारी मुक्ति-हेतु
हर व्यक्ति हिन्द का अड़ा बढ़ा है।
हम नहीं चाहते किसी देश को अधिकृत करना।
हम नहीं चाहते किसी राष्ट्र को विकृत करना,
जन-जन की यह क्रान्ति ध्वस्त तुम को कर देगी
मुक्ति-वाहिनी दर्प तुम्हारा सब दर देगी।
जाओ जय का घोष करो तुम बंगला-वासी
जाओ जय का वेष धरो, मुजीब-विश्वासी,
विजय तुम्हारी देर भले हो, विश्व यहीं है कहता
हिन्द तुम्हारे साथ, भले कोई हो डरता।

● महेशचन्द्र मिश्र 'विधु'

मुक्तिवाहिनी : विजयवाहिनी

हमें लड़ाई लड़नी है, तुम्हें लड़ाई लड़नी है।
नगर-गाँव को लड़नी है, पूरे देश को लड़नी है॥

हमला आदर्शों पर है, सत्य-शाँति के घर पर है,
न्याय-नियम-निष्ठा पर है; पूरी मानवता पर है।
साहस पुत्रो ! ओ रणधीरो !! कोटि-कोटि विश्वासी-वीरो
दुश्मन की छाती पर चढ़कर, मुक्ति-ध्वजा फहरानी है॥
हमें लड़ाई लड़नी है, तुम्हें लड़ाई लड़नी है।
नगर-गाँव को लड़नी है, पूरे देश को लड़नी है॥

माँ रक्तिम शृंगार किए है, रणचण्डी अवतार लिए।
ऐसा जोश जवानी में है, कुर्बानी परिवार किए।
दुश्मन के छक्के छुटवाने, फौलादी-इन्सान लिए,
जहाँ दुधमुँहे बच्चे तक हैं, फौलादी अरमान लिए॥
अब की बार बता देंगे हम, नाक चना चबवा देंगे।
रावलपिंडी ढाका क्या है ? पाकिस्तान मिटा देंगे॥

खेत जगे, खलिहान जगे हैं, भारत वीर किसान जगे,
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों के, मानव-प्रिय अरमान जगे।
कोटि-कोटि विश्वास चरणधर, भारत वीर जवान जगे,
मुक्तिवाहिनी विजयवाहिनी धर्म युद्ध गतिवान जगे॥
दुश्मन की काली करतूतें, हमको सभी मिटानी हैं।
हमें लड़ाई लड़नी है, तुम्हें लड़ाई लड़नी है,
नगर-गाँव को लड़नी है, पूरे देश को लड़नी है॥

संकल्पों की गूँज देश में, बलिदानों की होड़ है,
जो भी जहाँ सजग श्रम-साधन, अभियानों की होड़ है।
तन-मन-धन सर्वस्व निछावर स्वाभिमान सम्मान पर,
सिर पर बाँधे कफन जवानी अपने हिन्दुस्तान पर ॥
भेद-भाव से दूर एक हम, आजादी के लिए एक हम,
दानवता को कुचल मसलने, हिन्दुस्तानी सभी एक हम।
हमको, तुमको और सभी को इज्जत आज बचानी है।
हमें लड़ाई लड़नी है, तुम्हें लड़ाई लड़नी है,
नगर-गाँव को लड़नी है, पूरे देश को लड़नी है।

हर कुर्बानी देकर जन-आजादी आज बचानी है,
तानाशाही क्रूर-साम्राज्जियों को आज मिटानी है।
युद्ध माँगते दुश्मन के मुँह में अब गोली भरनी है,
वीर सपूतो ! धरती-पुत्रो !! शांति-ध्वजा फहरानी है ॥
सीमाओं के सत्य जग रहे, और साधना करनी है।
जन-युग की आधार-शिला दृढ़ और सुदृढ़तम करनी है।
हमे लड़ाई लड़नी है, तुम्हें लड़ाई लड़नी है।
नगर-गाँव को लड़नी है, पूरे देश को लड़नी है ॥

• महेशचन्द्र मिश्र
'विभु'

भारत-शौर्य

दुष्ट-दुखियारो महिमा मे पाक-शाहन को,
मुट्टो को मुड़ाय सिर गुट्टो करि दैवेगो ।
घोनो घाओ-भाओ को नसाय पाक-रावण को,
सुट्टो सों छुटाय, चिर-चुट्टो करि दैवेगो ॥
विश्व-गुण-गरिमा मिटाय मान-महिमा को,
काल-विकराल कालि कुट्टो करि दैवेगो ।
साम सों बढ़ाय इस्लाम पै, कलंक आज,
गौरव गुमान शान सुट्टो करि दैवेगो

बढ़ आततायियों के सिर आज काट-काट,
पाट-पाट शाही पूत पानी रखि लेवैंगे ।
चढ़ पाक-पापियों के पापी पल प्राण फूंकि,
बाट-बाट बहुरि भवानी लखि लेवैंगे ॥
चूर-चूर करिके घमण्ड चण्ड-चण्डिका को,
आरती सुभारती उतारि आज लेवैंगे ।
ज्ञानी-मानी इन सम कोऊ नाहीं जग माहिं,
परलय पल में मचाइ आज देवैंगे ॥

शिवा के समान वीर-बांकुरे भरे है यहाँ,
नन्ही-नन्हीं बाहो में भी भीष्म का बल है ।
लक्ष्मी-सी रानी, बानी सांवरे हमारे यहाँ,
छुन्नी-मुन्नी बाहो मे ही बैरिन का हल है ॥
भूषण से वीर कवि कविता करत बहु,
लरत-भिरत वीर बैरिन से दल हैं ।
आज प्रण ठानो सो तुरत करि देत पूर,
कोऊ न कहत करि लेंगे फिर कल है ॥

मुक्तिवाहिनी

दाता हैं विधाता भाग्य-भारत दुलारे नेक,
एक-एक नेक-नेक करतब्र जाए हैं।
ज्ञाता हैं सुजाता-शुचि-शारद सहाय 'विधु'
शांति-सत्य-साधक सुगीता-स्वर भाए हैं ॥
माता हैं सुनीति-सिय शील-निधि-खानि बहु,
ध्रुव-लव-कुश से वीर-पुत्र जाए हैं।
भ्राता है भगीरथ-सों, गंग-वेगि लाइ रह्यो,
राम-राज्य राम के गुनन वेद गाए हैं ॥

गाए हैं गुनन वेद गौरव-गुनीनन-सो,
जानत जहान शौर्य्य-साहस के साए है।
साए हैं सलोने श्याम राम अभिराम-ज्यों,
क्रूर-कंस, रावण को मर्दि-मर्दि आए हैं ॥
आए है यह वैरिन को रण मे पछारि-मारि,
छिन-छिन माहि जग-जीति-जीत-जाए हैं।
जाए हैं जमूरे दुष्ट-दानव-दलन-हेतु,
कौरव-यहिया के ये प्राण लेन धाए हैं ।।

धाए हैं निशाचरी-प्रवृत्ति को मिटाने आज,
जन-हित, जन-युग, जन-घन छाए हैं।
छाए हैं सवेग-वेगि, कीरति जहान मे हैं,
भारत के वीर महावीर बनि आए हैं ॥
आए है लुटेरो की लुटेरी-रीति चूर करि,
जानो यह-महेश के गनेश बनि धाए हैं।
धाए है सगर्व दर्प अरि-मुण्ड काटि-काटि,
मानो प्रलयकर यह शङ्कर सिधाए हैं ॥

● महेश चन्द्र मिश्र 'रिपु'

कवि का संकल्प

तलवार से भी तेज आज कलम हाथ में,
दागेंगे गुड़ाके दम भरेंगे अगम आग में!
माता के दूध की है लाज आज बचानी,
सच कहता हूँ दुश्मन की दशा एक हाथ में!!

मर जायें या मिट जायें अपने देश के लिये,
सर्वस्व निछावर करेंगे देश के लिये!
भूषण बनेंगे वीर-कवि, कविता करेंगे और—
जय-घोष गीत गाएँ, मुक्त-देश के लिये!!

हम और बढ़ेंगे ही, अमन-चमन के लिये,
सीने पै शत्रु के चढ़ेंगे, दमन के लिए!
गाएँगे युद्ध-गीत आज अस्थि-दान कर,
सम्मान-स्वाभिमान-शान आन के लिये!!

वसुधैव-कुटुम्ब का ख्याल आज करेंगे,
सत्य-शांति-साहस शुचि-भाल करेंगे!
रणबाकुरे बढेंगे अरि-दल कतर-कतर,
शायर-कलम से दुश्मन-सिर कलम करेंगे!!

खौला है खून रगों में, है जोशे-जवानी,
दुनियाँ को पता है कि यह भारत की जवानी!
जो भी भिड़ा है इनसे, उन्हे याद है 'महेश'
छट्ठी का दूध, माँ के पेट की भी निशानी!!

मुक्तिवाहिनी

मत आँख दिखाओ, जनाब होश में आओ
पाला पड़ा है हिन्द से, अब होश में आओ!
इंसानियत के नाम पै तस्लीम अर्ज कर,
आदाब कर रहा है इन्सान, शरमाओ!!

कवि आग बरसाएगा, शत्रु सुन तेरे लिये,
तप, त्याग दिखलाएगा अपने देश के लिए!
फर्जों पै, हुकूकों पै मिटेगा यह आज 'विधु'
कण-कण के स्वाभिमान-सत्य-शील के लिये!!

फूंकेगे प्राण और जो क्रुद्ध मौन खड़े हैं;
देगे महाप्रलय मचा ये जौन अड़े है!
गर मानते नहीं हो, तो रायफल लिये—
आता हूँ कलम छोड़, तेरे प्राण के लिये!!

कुरान की कसम यह तेरा काल आया है,
मनमानी मिटाने को, यह पैगाम लाया है!
धरती से साम्राज्यवाद को ही मिटाने,
भारत का वीर-धीर नौजवान आया है!!

हम एक हैं, हम नेक हैं, आवाज एक हैं,
जमहूरियत के नाम पै इन्सान एक हैं!
हम शांति के पुजारी, रण-वीर बाकुरे,
हैवानियत मिटाने को, अरमान एक हैं!!

● महेश चन्द्र मिश्र 'विधु'

गणतंत्र बांगला देश की जय

त्याग और बलिदान की जय
मुक्तिवाहिनी-आन की जय !
वीर-भोग्या-वसुन्धरा के,
रण-बाकुरे जवान की जय !!

साहस-शक्ति-प्रयाण की जय,
बंग-बन्धु रहमान की जय।
मानवता के त्राण प्राण प्रिय,
युग-चेता ऐलान की जय ।।

कोटि-कोटि विश्वास की जय,
धरती-अम्बर आस की जय !
जय जनतंत्र महान-क्रान्ति की,
युग-वरेण्य-वरदान की जय !!

अमर नए-गणतंत्र बागला देश की जय,
शक्ति-इंदिरा युक्तिपूर्ण-विश्वास की जय !
मिली मान्यता, दुश्मन पानी माग रहा,
सत्य-न्यायप्रिय जनता के अरमान की जय !!

भारतवर्ष महान शान अभियान की जय,
सच्चे [वीर ईमानदार इंसान की जय !
बलिदानी इतिहास धरा संतान की जय,
अच्छे धीर-बहादुर जन-भगवान की जय !!

अमर रहे गणतंत्र युगों तक शान से,
बंगला देश महान मुक्ति-यश-गान से।
धन्य-धन्य इतिहास धरा युग धन्य है,
बंगला देश महान मुक्ति-बलिदान से ।।

● ● ●

महेश चन्द्र 'सरल'

चमक रहा है अब बँगला सोनार

जो अवाम के साथ रहा, बनकर स्वयं गरीब,
जिसके संघर्षों से आया, जन-जन बहुत करीब,
बलिदानों की होड लगा दी, जय-जय बँगला देश,
बंग-बंधु ! नर नाहर, तुमको कहते शेखमुजीब।

●

अमहकार की मूर्ति बन गये, तुम जन-जन के प्राण
बँगला देश-मुक्ति में देखा माता का कल्याण,
रक्तार्पण से लिखा गया, बलिदानों का इतिहास,
युग-चेता, हे वंग-बन्धु ! मिल गया मनुज को त्राण।

●

'स्वतंत्रता अधिकार मनुज का, इसे समझने वाले,
देश-प्रेम की हाला को पीने वाले मतवाले,
बंग-बंधु ! तुम आजादी के ऐसे हो परवाने,
साढ़े सात करोड़ भाग्य को, एक चलाने वाले।

●

बग-बंधु बलिदान सफल है, हुआ स्वप्न साकार,
विश्व-मंच पर चमक रहा है, अब बँगला सोनार,
उत्पीड़न, शोषण का दानव, ऐसा हुआ परास्त,
युग-युग पीढ़ी याद करेगी, जैसी खाई मार।

आक्रमण करके तुम्हीं ने क्या किया ?
शीश को अपनी स्वयं कटवा दिया,
और गुरु तुम्हारी युवतियों ने दी तुम्हें,
मौत के मों ' घाट सागर रंग दिया।

•

हम जगत में शान रखना जानते हैं,
राष्ट्र को निरजोर ही पहचानते हैं,
यदि तुझे भ्रम हो गया हो तो समझ ले,
शान को निर्माण भी हम मानते हैं।

● महेश चन्द्र 'सरल'

मुक्ति-वाहिनी चली

मुक्ति-वाहिनी चली,
रौद्र-रूप में ढली,
'आमार सोनार बांगला'
घोष कर डगर-गली,
मुक्ति-वाहिनी चली।

किशोर हैं तो क्या हुआ,
वृद्ध दे रहे दुआ,
जवानियाँ मचल उठीं,
स्वतंत्र बाँगला हुआ,
विश्व चकित रह गया,
जीत आ गले मिली
मुक्ति-वाहिनी चली !!

हिली धरा, हिला गगन,
कि जाग उठा बाँकपन,
स्वदेश-मुक्ति के लिये,
बढे कदम रहे मगन,
कि खा शपथ विजय-श्री,
भस्म देह में मली,
मुक्ति-वाहिनी चली।

मुक्ति, विजय-पर्व है,
किसे न आज गर्व है,
कि शौर्य-ध्वज चमक उठा,
जो विश्व में अपूर्व है,
ओ ! जय जवान भारती,
परास्त कर दिया बली,
मुक्ति-वाहिनी चली !!

नया सूरज उगवाया

अंधे-अंधियारों ने अब तक काफी अंधाधुंध मचाया।
इसीलिये हमने पूरब में एक नया-सूरज उगवाया॥

किरण-किरण ने रंग भर दिया,
धरती को भी स्वर्ग कर दिया,
जगह-जगह पर जंग कर दिया,
हर दुश्मन को तंग कर दिया,

फिर भी तम की संतानों ने गैरों से आँखें दिखवाया,
इसीलिये हमने पूरब में एक नया-सूरज उगवाया,

जंगल को मैदान कर दिया,
खेतों को खलिहान कर दिया,
पनघट को वीरान कर दिया,
बस्ती को श्मशान कर दिया,

जिंदा का दामन फड़वाया, मुर्दों का भी कफन खिंचाया।
इसीलिये हमने पूरब में एक नया-सूरज उगवाया॥

और बाप के सम्मुख ही,
बेटी का चीर हरण करवाया,
भाई और बहन को संग में,
रहने का फरमान सुनाया,

यदि इन्कार किया तो फौरन तड़पा-तड़पा कर मरवाया।
इसीलिये हमने पूरब में एक नया-सूरज उगवाया॥

शांति-सदन में आग भर दिया,
पौरुष में भी क्रांति भर दिया,
बंगला को संत्रस्त कर दिया,
जो कुछ था वह सभी हर लिया,

गंदे-गलियारो ने अब तक कूड़ा-करकट बहुत बहाया।
इसीलिये हमने पूरब में एक नया-सूरज उगवाया॥

सुबह हुई है शाम नही है,
यहां तुम्हारा नाम नही है,
यह झूठा इलजाम नही है,
ऐसा युद्ध-विराम नही है,

तुम मनमानी करते जाओ और न हम कर सकें सफाया।
इसलिये हमने पूरब में एक नया-सूरज उगवाया॥

भीख माग कर खाने वाले,
जाने अब कैसे जीते है?
वह क्या बात करेगे खुलकर,
फटी पुरानी जो सीते हैं,

अब समझाना बन्द कर दिया, बहुत बार अब तक समझाया।
इसीलिये हमने पूरब मे एक नया-सूरज उगवाया॥

अभी सबेरे ही कहते थे,
भारत से हम बदला लेंगे,
भारत वाले भी कहते हैं,
बद-बद कर हम बदला देंगे,

इतने हुये बेरहम ज्यादा पीकिंग से डाकू बुलवाया।
इसीलिये हमने पूरब मे एक नया-सूरज उगवाया॥

हमने शेषनाग के सिर पर,
चढ़ करके बांसुरी बजाया,
ग्वाल-गवारों के संग रह कर,
गौओं का सौभाग्य जगाया,

चीनों से समझौता कर के दुश्मन से भी हाथ मिलाया।
इसीलिये हमने पूरब मे एक नया-सूरज उगवाया॥

रमेश चन्द्र 'सुकंठ'

रक्त की धरती प्यासी है

करो रणचण्डी का आह्वान मातृ बलिवेदी पर आओ।
निरखती तृषित अधर ले राह, रक्त की धरती प्यासी है॥
शत्रु की बजती रण-दुन्दुभी, घिरी हैं सारी सीमाएँ
चुनौती भारत को दे रहा, वीर युद्धस्थल में आएँ।
त्याग दो निज-प्राणों का मोह, आत्मा अजर-अविनासी है।
रक्त की धरती प्यासी है॥

उधर हो रहा ध्वस्त बांगला, हो रही जनता बेघर की,
इधर विस्फोटों में जल रही, क्यारियां कुंकुम केसर की।
दुधमुँह-स्वर्णिम-स्वप्नों पर, छा रही मूक-उदासी है।
रक्त की धरती प्यासी है॥

बचाओ निज-वैभव की लाज, युद्ध के भीषण-संगर में,
उड़े यह एक बार फिर विजय-पताका मुखरित्त अम्बर में।
उदय हो रही क्षितिज पर दूर, विजय की पूरनमासी है॥
रक्त की धरती प्यासी है॥

भीम अर्जुन के वंशज उठो, शिवा-राणा की संतानों,
बांगला-देश मुक्ति के भारत का प्रण जीवन-व्रत ठानों।
राष्ट्र-प्रण जन-जन का उद्देश्य, यही काबा अरु कासी है॥
रक्त की धरती प्यासी है॥

मुक्तिवाहिनी

सहेंगे अंतिम सांसों तक न दुःख होगा निज कष्टों पर,
पराक्रम पौरुष आंकेगा, हमारा युग मुख-पृष्ठों पर।
रणस्थल माँ की गोद समान, विजय-श्री अपनी दासी है।।
रक्त की धरती प्यासी है।।

भूत, भैरव, योगनियाँ चलें, सजाएं खप्पर मतवाला,
पधारे महाकाल विकराल, पहन नें मुंडों की माला।
बहाने मे अरि-शोणित-धार, देश यह चिर-अभ्यासी है।
रक्त की धरती प्यासी है।।

उर्वरा यह वीरों की भूमि, वीरता जहाँ संवरती है,
जननि यह चक्रवर्तियों की, महापुरुषों की धरती है।
यहाँ का कण-कण ज्वालामुखी, शत्रु के लिये विनाशी है।।
रक्त की धरती प्यासी है।।

● रमाकान्त शुक्ल

युद्ध

तुम सुषुप्ति के स्वप्न और जागृति की गति हो,
तुम पतितों की औ' दलितों की नई-नियति हो।
महाकाल की आतुरता में तुम लघु-यति हो,
तुम मानव के मर्षण की अन्तिम परिणति हो।।
अन्धकार में मग्न जगत् को प्रभा-पुन्ज से,
भरने के हित महा-शक्ति की मन्द-स्मिति हो।
तुम अति गलित पुरातन-प्रियता को बुहारते,
तुम क्षण-क्षण नवता की, सुन्दरता की कृति हो।।
पराधीनता जन्म, दीनता के दुःखों से,
पीड़ित जन-मानस में पौरुष की स्मृति हो।
देश-काल की सीमाओं को तोड़ सहज में,
एक दिवस में शत-शत वर्षों की उन्नति हो।।
चेष्टा के अवतार!
विक्रम के उपहार!!

जब बर्बरता के हाथों से मिटता तरुण-सुहाग,
उत्पीड़ित से जब जलती है अन्तर तम में आग।
जब असुरक्षित हो जाती है माँ बहनों की लाज,
जब सतीत्व पर दानव ढाते कामुकता की गाज।।
अनाचार की लपटों में जब आसमान जलता है,
मानव हो निर्लज्ज श्वान-सम बलात्कार करता है।
जब संगीनों से बेधी जाती शिशुओं की छाती,

जब माता के सम्मुख बच्चे की काया बिलखाती ।।
पिता देखता जब पुत्री की खींची जाती चोली,
दुराचार के बाद मार दी जाती धड़ से गोली।
जब निरीह-मानव के दृग आँसू बरसाते,
तुम क्रोधानल कुण्ड जला नरमेध रचाते ।।
तुम उद्वेलित ज्वार !
तुम सजीव संसार !!

तुम विनाश के नहीं सृजन के अग्रदूत हो,
मौन क्रोध से तप्त हृदय के तुम सपूत हो।
तुम सहस्र शीर्षः पुरुष तुम सहस्राक्ष हो,
खोल तीसरा दृग ताण्डव-रत विरूपाक्ष हो ।।
यम-दंष्ट्रा की क्षुधा, जिगीषा तुम सुरेन्द्र की,
पद तल गत त्रिभुवन विराट् काया उपेन्द्र की।
तुम अगस्त, तुमको नम्र कर सुमेरु झुक जाते,
भाल कूट सी देख दुर्ग दुर्गम [illegible] ।।
तुमसे मिलकर धरती ने नव वेश सजे हैं,
बन्दूकों की नलियों में दीपराग बजे हैं ।
सदा तुम्हारे स्वागत को दुलहिन उमड़ी है
जिधर चले तुम उधर विजय की बाह मुड़ी है ।।
आशा के [illegible] !
तुम हो [illegible] !!

तुम आगे हो पौरुष का [illegible] है
[illegible] के करने को [illegible] है।
उमड़ाता पुरुषार्थ [illegible] ।
हरियाली [illegible] है [illegible] ।
[illegible] है [illegible] ।
[illegible] ।

कृपा-कृपण-करवाल मांग भरती सिन्दूरी ।।
शान्ति तुम्हारे उर पर जयमाला पहनाती,
गीत नए-जीवन के विजयश्री है गाती।
बोकर रक्त-बीज लाते निर्माण धरा पर,
हर्ष-मुक्त हो जाता सब संसार चराचर ।।

जीवन ज्योति प्रसार!
बहती रस की धार!!

मुक्तिवाहिनी

● रवीन्द्र दीक्षित

देश की वह कृति बनें

'सत्य-जय' उच्चार जिसमें, 'पंचशील' प्रसार जिसमें,
देश की वह रज सदा बनती रहे श्रृङ्गार मेरा !

सर्वदा शीतल पवन, माँ के सुनहरे केश परसे,
माँग का मकरन्द, केसर-क्यारियो मे आप सरसे,
स्वर्ण-रजित शैल मालाएँ जडी हैं बेदियाँ-सी,
शुद्ध श्रम-जल बालियाँ सौभाग्य की नित नई बरसें,
कर्म ही विश्वास जिसमे, धर्म ही विश्वास जिसमें,
देश की वह कृति बने बस साँस का संसार मेरा !

विश्व-कवि की मनुजता ले आप गीताजलि मुखरती,
भक्त नरसी के स्वरो मे गुजरी-गरिमा बरसती,
भारती की आरती भी भारतीय हमे बनाती,
महाराष्ट्र महानता ज्ञानेश्वरी में है उफनती,
कल्हणी कलहास जिसमें, वल्लत्तोल विलास जिसमें,
देश की अभिव्यक्ति हो वह, काव्य का उद्गार मेरा !

है हिमालय ही बना, जिसका सदा से आप प्रहरी,
सिन्धु की भी उर्मियाँ जिसके चरण पर आन ठहरी,
भागीरथी के पुण्य-जल का ज्वार भी इतना चढा है,
पंच नदियाँ आज भी कर्मेन्द्रियों में भरी गहरी,
'भाखरा' के भाग जिसमें, 'रूरकेला' राग जिसमें,
देश की वह कृति बने बस शक्ति का संचार मेरा !

सदा पानीपत हमारे देश का पानी परखता,
चन्द्रगुप्त, प्रताप से था शत्रु भी हरदम सहमता,
बेटियाँ हैं इंदिरा-सी आज भी अब जन्म लेतीं,
त्याग औ बलिदान बँगला-देश का इतिहास रखता,
रक्त का शुभ-दान जिसमे, मृत्यु का आह्वान जिसमें,
देश की वह ज्योति हो, बस आंस या अङ्गार मेरा !

● राजकिशोर पाण्डेय
'प्रहरी'

सत्य नहीं झुकता है !

संगीनो के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है।
धूम-ढेर के नीचे कभी अंगार नहीं छुपता है॥

आजादी की जगह मिली बरबादी हर बंगाली को,
चूनर को पाक-दरिन्दो ने हा, शव-परिधान बना डाला।
रुनझुन पायल के स्वर बदले तांडव-स्वर मे,
शस्य-श्यामला बंग-भूमि को हा, शमशान बना डाला॥

लाशो के ढेरों पर खड़ा हुआ, इतिहास सिसकता है।
संगीनो के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है॥

जिस जवान के सम्मुख उसकी माँ-बहनों की लाज लुटे,
उसकी आँखें कब तक ये सब जुल्म देख सकती है ?
सहनशीलता की भी तो, कोई आखिर सीमा है—
ज्यादा घिसने से चन्दन मे, आग भड़क उठती है॥

हर बंगाली के हाथो मे, बन्दूक दीख पड़ता है।
संगीनों के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है॥

जब ठंडा खून गर्म हो गया, वृद्धो मे भी जोश जग उठा,
अत्याचारो से ढका हुआ, ज्वालामुखी लगा उबलने।
अपनी मातृभूमि को मुक्त कराने दुष्टो के चंगुल से,
सिर पर बाँध कफन जवानी, मुक्ति-योद्धा लगे निकलने॥

दृढ-निश्चय के आगे साथी, लोहा भी झुकता है।
संगीनों के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है॥

एक बार फिर रावण के अत्याचारो से पृथ्वी कांपी,
एक बार फिर त्रेतायुग ही, सचमुच कलयुग में ही आया।
एक बार फिर बढ़े राक्षस, अबलाओ की इज्जत लूटी,
एक बार फिर वहाँ विभीषण हमसे शरण मागने आया।

● डा० राजेन्द्र मिश्र

वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है

धरा के रोम-रोम की यही कहानी है
वतन में नीर है तकदीर है जवानी है !!

यहीं दमकता है नगराज देशमान लिए
यहीं महकता है कश्मीर फूलपान लिए।
यही अकड़ता है मेवाड़ आनबान लिए
यही लरजता है गुजरात सुबह-शाम लिए !!

हरेक ढूंढ़ की अपनी अमिट निशानी है
वतन में नीर है, तकदीर है जवानी है !!

वतन है हिन्दुओं का, हिन्दुओं की जय बोलो
वतन है मुस्लिमों का, मुस्लिमों की जय बोलो !
समझ के अपना जो भी कौम इसे प्यार करे
लगन से आंख मूंदकर उसी की जय बोलो !!

कबीर-तुलसी हैं दो—किन्तु एक बानी है
वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है !!

रचे तो मन्दिरों में बैठ वेद-पाठ करो
रचे तो मसजिदों में सिजदा और नमाज पढ़ो !
रचे तो यीशु औ जरथुष्ट्र के संदेश सुनो
रचे तो जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, स्मार्त बनो !!

यहां न कोई इधर अटपटी बेगानी है
वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है !!

मानवता-मरण नकारें कैसे, आँखों के सम्मुख घटता है।
संगीनों के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है।।

वीर कर्ण की जन्मभूमि यह, कोई कभी निराश न लौटा,
जब भी कोई शरण माँगने चलकर अपने घर में आया।
शरणागत को अभय-दान दे, उसका पूरा साथ निभाया,
भले स्वयं उसकी रक्षा में, निज प्राणों का करें सफाया।।

अत्याचारी वह भी तो है, जो जुल्म देखता रहता है।
संगीनों के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है।।

दुःखियों की चीख-पुकार सुनी तो हाथ मूठ पर जा पहुँचा,
भारत की विजयवाहिनी ने ढाका पर घेरा डाल दिया।
सैन्य-समर्पण किया नियाजी-से हत्यारों-श्यारों ने,
जब भारत-वीरो ने अपने पौरुष का झंडा गाड़ दिया।।

हुआ पराजित बाज, कपोत स्वच्छंद गगन में उड़ता है।
संगीनों के डर से कभी भी सत्य नहीं झुकता है।।

टेक दिए घुटने असत्य ने, और सत्य की विजय हुई,
हार गए पाकिस्तानी, हम विजय-श्री को वर लाए।
सिंहासन से किया विभूषित, सुनो विभीषण न्यायी को,
आदर्शों की विजय-पताका ले, अपने हम घर आए।।

आज बांगला-देश नवोदित मंगल-स्वर बजता है।
संगीनों के डर से कभी भी सत्य नहीं झुकता है।।

● डा० राजेन्द्र मिश्र

वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है

धरा के रोम-रोम की यही कहानी है
वतन में नीर है तकदीर है जवानी है !!

यही दमकता है नगराज देशमान लिए
यही महकता है कश्मीर फूलपान लिए।
यही अकड़ता है मेवाड़ आनबान लिए
यही लरजता है गुजरात सुबह-शाम लिए !!

हरेक दूँह की अपनी अमिट निशानी है
वतन में नीर है, तकदीर है जवानी है !!

वतन है हिन्दुओं का, हिन्दुओं की जय बोलो
वतन है मुस्लिमों का, मुस्लिमों की जय बोलो !
समझ के अपना जो भी कौम इसे प्यार करें
लगन से आँख मूँदकर उसी की जय बोलो !!

कबीर-तुलसी हैं दो—किन्तु एक वानी है
वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है !!

रुचे तो मन्दिरों में बैठ वेद-पाठ करो
रुचे तो मसजिदों में सिजदा और नमाज पढ़ो !
रुचे तो यीशु औ जरथुस्त्र के संदेश सुनो
रुचे तो जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, स्मार्त बनो !!

धरा में कोई डगर अटपटी बेगानी है
वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है !!

विजयवाहिनी

शाश्वत-सत्य नकारें कैसे, आँखों के सम्मुख घटता है।
संगीनों के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है।।

वीर कर्ण की जन्मभूमि यह, कोई कभी निराश न लौट
जब भी कोई शरण मांगने चलकर अपने घर में आया
शरणागत को अभय-दान दे, उसका पूरा साथ निभाया
भले स्वयं उसकी रक्षा में, निज प्राणों का करें सफाया।

अत्याचारी वह भी तो है, जो जुल्म देखता रहता है।
संगीनों के डर से कभी भी, सत्य नहीं झुकता है।।

दुःखियों की चीख-पुकार सुनी तो हाथ मूठ पर जा पहुँचा,
भारत की विजयवाहिनी ने ढाका पर घेरा डाल दिया।
सैन्य-समर्पण किया नियाजी-से हत्यारों-श्यारों ने,
जब भारत-वीरों ने अपने पौरुष का झंडा गाड़ दिया।।

हुआ पराजित बाज, कपोत स्वच्छंद गगन में उड़ता है।
संगीनों के डर से कभी भी सत्य नहीं झुकता है।।

टेक दिए घुटने असत्य ने, और सत्य की विजय हुई,
हार गए पाकिस्तानी, हम विजय-श्री को वर लाए।
सिंहासन से किया विभूषित, सुनो विभीषण न्यायी को,
आदर्शों की विजय-पताका ले, अपने हम घर आए।।

आज बांगला-देश नवोदित मंगल-स्वर बजता है।
संगीनों के डर से कभी भी सत्य नहीं झुकता है।।

● डा॰ राजेन्द्र मिश्र

वतन में नीर है, तक़दीर है, जवानी है

धरा के रोम-रोम की यही कहानी है
वतन में नीर है, तकदीर है जवानी है !!

यही दमकता है नगराज 'देशमान लिए
यही महकता है कश्मीर फूलपान लिए।
यही अकड़ता है मेवाड़ आनबान लिए
यही लरजता है गुजरात सुबह-शाम लिए !!

हरेक ढूंढ की अपनी अमिट निशानी है
वतन मे नीर है, तकदीर है जवानी है !!

वतन है हिन्दुओ का, हिन्दुओ की जय बोलो
वतन है मुस्लिमो का, मुस्लिमो की जय बोलो !
समझ के अपना जो भी कौम इसे प्यार करे
लगन से आँख मूंदकर उसी की जय बोलो !!

कबीर-तुलसी हैं दो—किन्तु एक बानी है
वतन मे नीर है, तकदीर है, जवानी है !!

रुचे तो मन्दिरो में बैठ वेद-पाठ करो
रुचे तो मसजिदो मे सिजदा और नमाज पढ़ो !
रुचे तो यीशु औ जरयुष्ट्र के सदेश सुनो
रुचे तो जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, स्मार्त बनो !!

धरा न कोई डगर अटपटी बेगानी है
वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है !!

● डा॰ राजेन्द्र मिश्र

जय हिन्द ! जय बाँगला !!

शृङ्खलाएँ कट गईं तो द्वार मुक्ति का खुला
बोलो संग-संग जय हिन्द ! 'जय बाँगला' !!
प्यार शेख का स्वतंत्रता प्रदीप बन जला
बोलो संग-संग जय हिन्द, जय बाँगला !!

जय अनन्त क्लेश की, जय प्रचण्ड रोष की
जय स्वतंत्र देश की, जय सुवर्ण वेष की !
जय हो बंगबन्धु की, जय हो न्यायसिन्धु की
जय हो शुभ्र, निष्कलङ्क सप्तकोटि इन्दु की !!

आज विश्ववाटिका में फूल है नया खिला
बोलो संग-संग जय हिन्द ! जय बाँगला !!

आज विश्वमत तुम्हे कर रहा प्रणाम है
हर दिशा मे, हर गली में बस तुम्हारा नाम है !
रक्त-रक्त मे मिला, प्राण-प्राण में गला
आज हिन्दसैन्य ने तुम्हे दिया सलाम है !!

आज दो 'शरीर एक प्राण' का है सिलसिला
बोलो संग-सं जय हिन्द ! जय बाँगला !!

हम रहेंगे एक तन, हम रहेंगे एक मन
हम जियेंगे एक बन, बस यही कि 'दो वतन' !
हम न धर्म के लिए, वर्ण-जाति के लिए
या कि स्वार्थ के लिये करेंगे जुल्म औ सितम !

न जाने कौन-सा जादू धरा है इस भू में
न जाने कौन-सा अमृत भरा है इस भू में।
यहा के लाती है हर साल जो माटी गंगा
उसी में सोन बरसता, उसी में मन चंगा !!

उसी में लहरती किसान की किसानी है
वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी है !!

न इस धरा को है उमंग चाँद चढ़ने की
पशुत्वबल से दबा कर किसी को बढ़ने की।
इसे न कोई कुरेदे, न कोई घात करे
भिगो के नेह में कोई न छल की बात करे !!

यहाँ भी आग है, बारूद है भवानी है
वतन में नीर है, तकदीर है, जवानी !!

● डा० राजेन्द्र मिश्र

जय हिन्द ! जय बाँगला !!

शृङ्खलाएँ कट गईं लो द्वार मुक्ति का खुला
बोलो संग-संग जय हिन्द ! 'जय बाँगला' !!
प्यार शेख का स्वतंत्रता प्रदीप बन जला
बोलो संग-संग जय हिन्द, जय बाँगला !!

जय अनन्त क्लेश की, जय प्रचण्ड रोष की
जय स्वतंत्र देश को, जय सुवर्ण वेष की !
जय हो बंगबन्धु की, जय हो न्यायसिन्धु की
जय हो शुभ्र, निष्कलङ्क सप्तकोटि इन्दु की !!

आज विश्ववाटिका में फूल है नया खिला
बोलो संग-संग जय हिन्द ! जय बाँगला !!

आज विश्वमत तुम्हें कर रहा प्रणाम है
हर दिशा में, हर गली में बस तुम्हारा नाम है !
रक्त-रक्त में मिला, प्राण-प्राण में गला
आज हिन्दसैन्य ने तुम्हें दिया सलाम है !!

आज दो 'शरीर एक प्राण' का है सिलसिला
बोलो संग-सं जय हिन्द ! जय बाँगला !!

हम रहेंगे एक तन, हम रहेंगे एक मन
हम जियेंगे एक बन, कम नहीं कि दो वतन !
हम न धर्म के लिए, वर्ण-जाति के लिए
या कि स्वार्थ के लिये करेंगे जुल्म औ सितम !

ु को भी प्रेम-प्यार से ही देंगे हम जिला
लो संग-संग जय हिन्द ! जय बाँगला !!

हम न एक दूसरे का पक्षपात क
बन तटस्थ लोकतंत्र हम विकास करेंगे
जल-प्रवाह गंग-पद्म का भले पृथक र
किन्तु उनमें एक सी ही हम मिठास भरेंगे !

-हिंसकों की नींव तक को देंगे हम हिला
ो संग-संग जय हिन्द ! जय बाँगला !!

दृष्टिकोण एक है, पृष्ठ भूमि एक है
हिन्दभूमि एक है, स्वर्णभूमि एक है।
हो अखण्ड मित्रता, हो अनन्त मित्रता
कह रहा है विश्व ही 'हमारी साँस एक है' !!

ं भी पियेंगे फूँक, होंठ दूध का जला
ो संग-संग जय हिन्द ! जय बाँगला !!

• राजेन्द्र शुक्ल

समर-क्षेत्र में

वैसे हम अनेक मगर मुश्किलों में एक हैं !
दुश्मनों से जूझने को उत्सुक प्रत्येक हैं ॥

धूर्त कलाबाजियाँ दिखा रहे बड़ी-कुटिल,
सीधी-साफ राह को बना रहे बड़ी जटिल।
सत्य को असत्य कह बरगला रहे हैं जो,
अन्त और सन्निकट मगर बुला रहे हैं वो।

हमने तो जान लिया सत्य में विवेक है !
दुश्मनों से जूझने को उत्सुक प्रत्येक है ॥

प्रिय जो दर्शनों में थी आज बन रणचंडी,
शङ्खनाद जब किया, देश करे बंदगी।
झूम उठे बांकुरे, चंचला, चमक उठी,
रक्त-दान, प्राण-दान में है होड़-सी लगी।

मुक्तिवाहिनी व विजयवाहिनी अब एक है !
दुश्मनों से जूझने को उत्सुक प्रत्येक है ॥

विश्व समर-क्षेत्र में बलिष्ठ हो टिका हुआ,
निर्बल को समझे सब, है तो यह बिका हुआ।
आज हम सशक्त है, सत्य पर टिके हुये,
निश्चित ही भागेंगे झूठे और बिके हुए।

भारती की कोख के भारतीय एक है !
दुश्मनों से जूझने को उत्सुक प्रत्येक है ॥

अमर रहे रहमान, बांगला देश जगा।
मचा तहलका दुनिया भर के देशों में,
जनमत होने लगा व्याप्त गन्देशों में,
बात लगी होने सामान्य विशेषों में,
ढील न आई दिल्ली के आदेशों में,
जय-जय हिन्दुस्तान, बागला देश जगा।
जगा एक इंसान, बागला देश जगा।

हुई अचानक भारत पर गोलाबारी,
हमने की अपनी रक्षा की तैयारी,
किया शांति के लिए युद्ध हमने भारी,
महाकाल बन रिपु की सेना संहारी,
शाप हुए वरदान, बांगला देश जगा।
जगा एक इंसान, बागला देश जगा॥

मुक्तिवाहिनी विजयवाहिनी कहलाई,
आखिर को मुजाहिदों ने मुँह की खाई,
गूँज उठी गावों-शहरों में शहनाई,
अब-जग में महकी 'रवीन्द्र' की अमराई,
ऊँचा रहे निशान, बागला देश जगा।
जगा एक इंसान, बागला देश जगा॥

● राधेश्याम 'बन्धु'

भारत जाग रहा है

चंगेजी हर जुल्म मिटाने, जागा हिन्दुस्तान।
हमलावर को पाठ पढ़ाने, जागा हिन्दुस्तान ॥

प्रलयंकर शंकर-त्रिनेत्र को, आँख दिखाने वालो,
केशर-क्यारी-मुस्कानों पर, बम बरसाने वालो,
लक्ष्मण रेखा-सीमाओं को, घायल करने वालो,
भस्मसात् हो जाओगे भस्मासुर बनने वालो!
गौरव का गांडीव उठाने, जागा हिन्दुस्तान ॥

संयम की सीता को डँसकर, छलिया भाग न जाये;
'नजरूल' औ' 'मुजीब' की थाती, दुश्मन लूट न पाये,
दगाबाज नापाक पाक की दाल न गलने देंगे,
आदमखोर हिटलरी 'डालर' की चालें कुचलेंगे
जगखोर के दाँत तोड़ने जागा हिन्दुस्तान ॥

'हल्दीघाटी, 'कुरुक्षेत्र' को, अरि ने फिर ललकारा,
'गाँधी-'गौतम' की धरती पर चढ़ आया हत्यारा!
किन्तु 'भगत' के इन्कलाब से, दुश्मन भाग रहा है,
'लक्ष्मीबाई' की दहाड़ से दुश्मन भाग रहा है।
पशुता को इंसान बनाने, जागा हिन्दुस्तान ॥

मिल से लेकर खेत-खान तक, भारत जाग रहा है,
पूजा से लेकर 'अजान' तक, भारत जाग रहा है,
गुरुद्वारे से गिरजाघर तक, भारत जाग रहा है।
चूल्हे से हिमगिरि-सागर तक, भारत जाग रहा है॥
सत्य-शौर्य का सूर्य उगाने, जागा हिन्दुस्तान।
चंगेजी हर जुल्म मिटाने, जागा हिन्दुस्तान

● ● ●

—

● सुश्री राधारानी 'खत्री'

जौहरे-हिन्द

एक जादू-सा किया इन्दिरा गांधी तुमने,
अपनी तकरीरों से ऐसी हवा बाँधी तुमने !
गश्त दुनिया का किया जैसे कि आँधी तुमने,
शान भारत की बहुत ऊँची उठाई तुमने !!

मुर्दा-दिल सोए हुए मुल्कों को बा होश किया,
देके उनको झलक आजादी की पुरजोश किया !

बीस-पच्चीस बरस जिसने कि दु:ख पाया है,
चूसे जाने के सिवा हाथ न कुछ आया है।
कौम पुरजोश वही अब तेरी हम साया है,
मर्तबा उसको बराबर ही का दिलवाया है ।।

बांगला देश को आजाद बनाकर ही रही,
चूसने वालों के पंजे से छुड़ाकर ही रही।

पूर्वी जर्मनी, भूटान ने है मान लिया,
उसको बल्गेरिया, पोलेंड ने पहचान लिया !
बर्मा, मंगोलिया, नैपाल ने भी जान लिया,
हिंद के दिल में तो भाई का ही स्थान लिया ।।

सिलसिला मानने वालों का अभी है जारी,
रूस की, फ्रांस की, इंगलैंड की है अब बारी।

निक्सनो-चाऊ ने कुछ जाल बिछाया ऐसा,
फांसकर यहिया को शागिद बनाया ऐसा ।
सब्जबाग कई बार दिखाया ऐसा,
हिन्द से द्वेष का कुछ पाठ पढ़ाया ऐसा ।।

शोर आलम मे उठा हिन्द का आया है जुवाल,
एक करोड आए हुए भूखों के खाने का सवाल।
वाह री इन्दिरा शाबाश किया कैसा कमाल,
ओफ निकल जाए जबा से भला क्या थी मजाल॥

रहबरी में तेरी सब भारती रहने को थे,
सुख हो या दु ख हो सभी मेल से सहने को थे।

धौस अमरीका ने दिखलाई हुई बन्द इम्दाद,
और यहिया को मदद दी कि वढा दे बेदाद।
इस परेशानी में भी तू रही हरदम दिलशाद,
मरहबा, मरहबा ऐ इन्दिरा तू जिन्दाबाद॥

जिनको दावा था बडा डालरो बमबारी का,
रास्ता ढूंढ रहे हैं वो तेरी यारी का।

तीन वादे थे तेरे पूरे हुए सब बाशान,
वंग आजाद हुआ, छूटे मुजीवुर्रहमान।
और शरणार्थी खुश-खुश चले अपने स्थान,
वग में, हिन्द मे रिश्ता है गोया कालिबो-जान॥

दौर पर दौर मुसीबत जदा आते ही रहे,
तेरे दामन मे मगर, प्यार वो पाते ही रहे।

मरहबा इन्दिरा ! भारतीय-रानी तू है,
मशरिकी धर्म की, तहजीब की बानी तू है।
रानी झासी की व रजिया की निशानी तू है,
बात तो यह है कि खुद अपनी ही सानी तू है,

देश के नाम को ऊँचा है उठाया तूने,
जौहरे-हिन्द है दुनिया को दिखाया तूने॥

● सुश्री राधारानी शास्त्री

शेख मुजीबुर्रहमान

तुम हो आजादी के जावाज मुजीबुर्रहमान,
वक्फ कुर्बानी के हमसाज मुजीब्बुर्रहमान !
फतह के जानते हो राज, मुजीबुर्रहमान,
बांगला-देश के हो नाज मुजीबर्रहमान !!

या खोदा ऐसे शहीदों की रहे उम्र-दराज,
इन पै ही करते सदा आए बनी आदम नाज

तुमको यहिया जो गुनाहों में मजा आता है,
क्या न थी याद गुनहगार सजा पाता है।
जैसे को तैंसा ये दस्तूर कहा जाता है,
बीज तो अपने मुताबिक ही समर लाता है।।

अहले इस्लाम थे और फिर भी खुदा भूल गए,
निक्सनो-चाऊ पैं इतराए, बहुत फूल गए।

यह न समझो कि वहां जितने भी अमरीकन हैं
सब ही मक्कार किसिंगर हैं, सभी निक्सन है।
अमरीका में ही कैनेडी भी हैं, एण्डरसन है,
जिनके सीने में है दिल ऐसे बहुत सज्जन है।।

जो सच्चाई ही को भगवान समझ लेते हैं।
जान देते है पै ईमान नही देते है।।

तुमने लाचारों पै जो जुल्मों सितम ढाए है,
उनसे अब्दाली व चंगेज भी शरमाए हैं।
सिर्फ दो हफ्तों के अन्दर ये असर लाए है,
मान और शान गवां जेल मे आप आये है।।

आज तुम हो व फकत कुंजे गिरिफ्तारी है,
तुझसे संसार के इन्सां को शरम मारी है।

नियाजी का था वादा था कि देंगे हथियार,
तुम पै हमला जो करेगा वे उसे देंगे मार।
तुमने ही हमला किया पहिले तो वे थे लाचार,
अपनी नफरत व तास्सुब के हुए आप शिकार ।।

नाज था नियाजी पे हथियार दिये उसने डाल,
फख्र था गाजी पे गोते में है वो खुद बदहाल ।

तुमने रहमा को बुलाया था बहाने के लिये,
भेज दी फौज इधर बग मिटाने के लिये,
जोशे आजादी को तोपों से दबाने के लिए,
औरतें, बच्चे, प्रोफेसर थे निशाने के लिए ।

क्या हुआ हश्र, कभी इसका हुआ तुमको ध्यान ।
तुम हिरासत में, वजारत में मुजीबुर्रहमान ।।

बाद मुद्दत के तेरे मुल्क के जागे हैं नसीब,
तू मिला उनको मुसीबत में तबीब और हबीब ।
पहले बंगला ने दिया तुमको जगह दिल के करीब ।
उनकी उम्मीदें मुजस्सिम हो तुम्ही प्यारे मुजीब ।।

धर्म से कौमें नहीं बनती दिखाया तूने ।
था जो जिन्ना को मकूला वो मिटाया तूने ।।

● डॉ० रामकुमार वर्मा
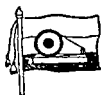
ओ मुक्ति वाहिनी

ओ मुक्ति वाहिनी ! तेरी गति से कांप रहा है शत्रु-क्षेत्र,
जैसे कि खुल गया महारुद्र का अग्नि-भरा तीसरा नेत्र।
तू पाक-शत्रु-विध्वंस हेतु लेकर हाथों में मृत्यु-पाश,
तू महाशक्ति-सी बढ़ी क्रुद्ध हो यहाँ नाश है, वहां नाश ॥

यह प्रतिहिंसा का दावानल है दग्ध कर रहा दिग्दिगन्त,
करुणा का वह चीत्कार आज हुंकार रोष का है दुरन्त।
निर्बल निरीह का वहाँ रक्त जब हुआ रक्त अभिषेक एक,
जो जन-समूह था विरल, वही संगठित शूर है एक-एक ॥ .

वह शिशु जैसे अधखिला फूल मां के आंचल का नया नूर,
उसको कुछ दुष्टों ने घसीट कर पत्थर पर कर दिया चूर।
संसार देखता रहा किसी ने किया न कोई शब्द व्यक्त,
शिशु के गुलाब के तन से जब धारा-धारा में बहा रक्त ॥

धिक्कार ! हाय री मानवता ! टुकड़ों-टुकड़ों में गई टूट,
यह कैसा कलुषित कृत्य कि कण-कण में करालतम कालकूट।
कितना यह है वीभत्स दृश्य, सारी मर्यादा गई छूट,
आखों-आखों के आगे आंखों की लज्जा ली गई लूट ॥

वह नव सुहाग-सौन्दर्य, केश के बीच सजी सिन्दूर-रेख,
उस पर जो अत्याचार हुए वह किसकी आंखें सकी देख ?
कितने सुख-स्वप्नों के सचित्र परिवार हो गये नष्ट-भ्रष्ट,
जो शेष रहे-शरणार्थी उनके कौन गिनेगा करुण कष्ट ?

ओ देश बांगला ! यही कष्ट थे, इन कष्टों से उठी आग,
तेरे मुजीब का मुक्तिवाक्य गूंजा कि देश भर गया जाग।
अभिशाप और अन्याय क्रूर जो सहते थे असहाय मूक,
वे आज शस्त्र लेकर प्रहार करते विपक्षियों पर अचूक ॥

ओ मुक्तिवाहिनी ! उठ, तेरा साहस तो है इतना प्रचण्ड,
यह दर्प-भरा नापाक पाक क्षण में ही होगा खण्ड-खण्ड ।।
तेरे प्रहार से शत्रु-पक्ष की सेना होगी धूल-ध्वस्त,
उसके अन्यायी आसन पर तेरा शासन होगा प्रशस्त ।।

तेरी इतनी दुर्धर्ष शक्ति ! तेरा इतना आक्रोश कोप,
काजी नजरुल का अग्नि-गीत नेता सुभाष का क्रान्ति घोष ।
रवि का गुरु गर्वित राष्ट्रगान वह मातृभूमि के लिए रोश ।।

मारे भविष्य का बोझ और मानवता का दायित्वपूर्ण
तू कर दे मेरी मुक्तिवाहिनी ! पाक शत्रु का गर्व चूर्ण ।
शोनार बांगला ! तू विजयी है, मुक्ति वाहिनी है महान्,
जग के प्रांगण में बार-बार, गूंजे तेरा ही विजय गान ।

● शम्भू रत्न मिश्र
'हिमांशु'

डोल उठा शंकर का आसन !

इसी देश में दाशरथ्य ने राक्षसता संहारी।
और इसी पर रण में उतरे थे निरस्त्र बनवारी।।
यहीं बुद्ध ने सत्य-अहिंसा के उपदेश प्रसारे।
यहीं आन पर वीर शिवा ने चुन-चुन वैरी मारे।।
यद्यपि हिंसा से डरते हैं किन्तु न कायर भोले।
समरभूमि में महाकाल हम ऐटम-बम के गोले।।
उस घर की हम बात करें क्या जिस घर तानाशाही।
बर्बरता शासन की गरिमा, है निर्माण तबाही।।
धर्म-जाति पर जिस घर मानव-मानव में हो दूरी।
जहाँ वीरता हो खूँख्वारी, कायरता मजबूरी।।

सत्य धर्म से दूर भले ही कर ले कुछ बेशर्मी।
लड़ सकता है युद्ध धर्म में हमसे कौन विधर्मी ?
ठोकर लगी जमीं रज-कण को, उड़ी शीश पर आई।
चमकी वही चचला जब-जब घनावली तम लाई !
देश-जाति पर मर मिटता जो उसकी अमर कहानी।
तूफानों से खेल-खेलकर गाता है सेनानी।।
डोल उठा शंकर का आसन, इन्द्रासन भी डोला।
उठा भयंकर 'प्रलयंकर बन कैलाशी बम-भोला।।
शूल-पाणि ने, शूल पाणि मे, फिर से आज सम्हाला।
पीना गरल नहीं फिर शिव को किसी गरल का प्याला।।

⊙

• डा० शिवमंगल सिंह
'सुमन'

नया कल्प

पन्ने पल्टो ! पन्ने पल्टो !!
भारत की नई जवानी ने
इतिहास नया लिख डाला है,
भूमिका भाग में
रघु की दिग्विजयों का कहीं हवाला है,
पढ़ लो, पढ़ लो दीवारों पर
तरुणाई ने जो गरम-खून से
नई-इबारत लिक्खी है
यह शौर्य-सूर्य की गाथा है
हर अंधकार थर्राता है
सागर का ज्वार उमडता है
धरती का धीरज गाता है ।
सम्मिलित राष्ट्र ने भैरव-स्वर में
ऐसा नव-सरगम साधा है
सांसों में ज्वालामुखी बन्द
तूफान कैद है मुट्ठी में
सब जात-वर्ग-फिरकेबाजी की
खोट गल गई भट्ठी में
सदियों का रुद्ध-उबाल
उमडता लावा-सा उफनाता है ।
ऐसे दल के दल उमड उठे
गुरुदेव घनों में घुमड उठे
"मातिया जखन उठे छे परान"
किसेर आधार, किसेर पाषाण ।
शस्त्रों की क्या औकात
सरफरोशों का होता साथ बड़ा

जहरीला-मूल बीज
बिहरे-बिखरे
हथियार बड़ा या हाथ बड़ा ?
हथगोलो से पैटन ढहते
नेट ने जेड मटियामेट किए
यो ही देवासुर समरो में
इन हथेलियो ने पहले भी
थे सातो सागर फेंट दिए।
संकट की ऐसी घड़ियां तो
पहले भी हम पर बीती थी
वानरो-भालुओ से हमने
सोने की लंका जीती थी,
जिसने सोनार-बांगला पर
जहरीली-ज्वाला उगली है
जिसने कश्मीरी-केसर पर
बारुदी धुन्ध उछाली है
उसका कोई ईमान नही
उसका कोई इमकान नही
उसकी खुरैजी, आगजनी पामाली हो, पामाली है।
यह जाति-धर्म के नारो का
सिक्का बिल्कुल ही जाली है,
हम प्रेम-नेम के दीवाने
हम विश्व-शांति के हरकारे
तुलसी रहीम, गालिब रवीन्द्र के स्वर हमने ही गुजारे
जिसके बहकावे मे आकर
तुमने सब तार तोड डाले
घर की खुशहाली दूर हुई
पड़ गए जान के लाले,
कैसे बेमौके तुमने ये मजहब के शोले सुलगाए
मानव मंगल-अभियानो मे
जब नया-कल्प आरम्भ हुआ
जब चन्द्रलोक की यात्रा के
सपने सच होने को आए।

जहरीला-मूल बीज
बिहरे-बिगरे
हथियार बड़ा या हाथ बड़ा ?
हयगोलों से पैटन ढहते
नेट ने जेड मटियामेट किए
यों ही देवासुर समरों में
इन हथेलियों ने पहले भी
ये सातों सागर फेंट दिए।
संकट की ऐसी घड़ियाँ तो
पहले भी हम पर बीती थी
वानरों-भालुओं से हमने
सोने की लंका जीती थी,
जिसने सोनार-बांगला पर
जहरीली-ज्वाला उगली है
जिसने कश्मीरी-केसर पर
बारुदी धुन्ध उछाली है
उसका कोई ईमान नहीं
उसका कोई इमकान नही
उसकी खुरैजी, आगजनी पामाली ही, पामाली है।
यह जाति-धर्म के नारों का
सिक्का बिल्कुल ही जाली है,
हम प्रेम-नेम के दीवाने
हम विश्व-शांति के हरकारे
तुलसी रहीम, गालिब रवीन्द्र के स्वर हमने ही गुंजारे
किसके बहकावे मे आकर
तुमने सब तार तोड़ डाले
घर की खुशहाली दूर हुई
पड़ गए जान के लाले,
कैसे बेमौके तुमने ये मजहब के शोले सुलगाए
मानव मंगल-अभियानों में
जब नया-कल्प आरम्भ हुआ
जब चन्द्रलोक की यात्रा के
सपने सच होने को आए।

• शिव शंकर
'शास्त्री'

ओ राष्ट्र-शौर्य्य तुम जागो !

विजय-श्री उन्माद निमग्ना
लिए खड़ी जयमाल प्रगल्भा,
अन्तराल की यह पुकार है
बलिदानों की यही राह है।

वीर बहादुर जागो !
ओ राष्ट्र-शौर्य्य, तुम जागो !!

भगतसिंह, आजाद, जवाहर,
गुरु गोविंद, सुभाष, उजागर,
भीम-गदा गांडीव कृष्ण-बल,
है जो रक्त बहा धमनी में,

शपथ उसी की जागो !
ओ राष्ट्र-शौर्य, तुम जागो !!

झांसी औ' मेवाड़ गरजते,
सप्तसिंधु नगराज सिहरते।
टैंक, तोप, मीराज-शक्ति क्या ?
पथ वीरों का कभी बदलते ?

सैनिक मेरे जागो।
ओ राष्ट्र-शौर्य तुम जागो !!

कुंकुम-तिलक महत्व हमारा,
अंग-बंग सौराष्ट्र देश सब।
कण-कण आत्म-तत्व क्या न्यारा
शरणागत वत्सल स्वदेश जब।।

बर्बर मार भगाओ !
ओ राष्ट्र-शौर्य, तुम जागो !!

जन-बल में इन्दिरा जगी है,
यह स्वदेश का स्वाभिमान है।
कण-कण शौर्य शक्ति-साहसमय,
यह स्वदेश की आन-बान है !!

रण-सपूत तुम जागो।
ओ राष्ट्र-शौर्य, तुम जागो !!

' विजयवाहिनी

—

तुम राग अलापो मजहब का
पैगम्बर को बदनाम करो
नापाक हरकतों से अपनी
नस्लों का कत्ले-आम करो
मानव-निष्ठा को ठोकर से
ककड़ी के भेजे-सा
छितरे-छहरे,
ओ, नस्लों की नरसरी
फले-फूले मौसम के झूले में
अंकुर फूटें, कोंपल लहकें
गमके महकें हर फुलवारी
सब प्यार-अमन की दुनिया में
खुशबू की बहरों में बहके
केसर की क्यारी का चूमें
मलयज की बाहों में झूमें
वर्ना अब तो उत्सर्गों के
हिम-शिखरों से
उद्दाम-वेग से उफन उठा
प्रलयंकर शंकर का झरना,
अब भी सम्हलो, अब भी सम्हलो,
उमड़ने के पहले
औकात परख रखना
या के नक्शे में अब भी
तुम शेष रखना।

• शिव शंकर
'शास्त्री'

ओ राष्ट्र-शौर्य्य तुम जागो !

विजय-श्री उल्लास निमग्ना
लिए खड़ी जयमाल प्रसन्ना,
अन्तर्मन की यह पुकार है
बलिदानों की यही राह है।
वीर बहादुर जागो !
ओ राष्ट्र-शौर्य, तुम जागो !!

भगतसिंह, आजाद, जवाहर,
गुरु गोविंद, सुभाष, उजागर,
भीम-गदा गांडीव कृष्ण-बल,
है जो रक्त बहा धमनों में,
शपथ उसी की जागो !
ओ राष्ट्र-शौर्य, तुम जागो !!

झांसी औ' मेवाड़ गरजते,
सप्तसिंधु नगराज सिहरते।
टैंक, तोप, मीराज-शक्ति क्या ?
पथ वीरों का कभी बदलते ?
सैनिक मेरे जागो !
ओ राष्ट्र-शौर्य तुम जागो !!

कुंकुम-तिलक महत्व हमारा,
अंग-बंग सौराष्ट्र देश सब।
कण-कण आत्म-तत्व क्या न्यारा
शरणागत वत्सल स्वदेश जब ।।
बर्बर मार भगाओ !
ओ राष्ट्र-शौर्य, तुम जागो !!

जन-बल में इन्दिरा जगी है,
यह स्वदेश का स्वाभिमान है।
कण-कण शौर्य शक्ति-साहसमय,
यह स्वदेश की आन-बान है !!
रण-सपूत तुम जागो !
ओ राष्ट्र-शौर्य, तुम जागो !!

• श्रीराम शुक्ल

मुक्तिवाहिनी

बंग-बन्धु शेख !
उमड़ रही जनता की देख,
दुनिया के समाचार-पत्र आज करते हैं
जी भर कर तेरा उल्लेख।
शेरे-बंगाल !
चमक रहा है तेरा भाल,
हिंसा, बर्बरता, एकाधिकार का तू है काल।
ओ जनबल के पहाड़ !
तेरी ही हुंकृति में गूँज रही
सिंह की दहाड़।
तेरे ही आह्वान पर निकले
कोटि-कोटि देशभक्त योद्धागण,
अपनी खुशहाली या खेतों की हरियाली
या बच्चों के भविष्य के लिये
किया खूब मुक्ति का जुझारू-रण।
जान बचे या न बचे
इसकी परवाह छोड़,
ढाका की छात्रा रोशनआरा बेगम ने
सीने में विस्फोटक 'सुरंग' बाँध
दुश्मन का टैंक दिया तोड़।
नगर-नगर, गाँव-गाँव, गली-गली,
गूँज उठी एक पंक्ति भली-भली
"आमार सोनार बांगला
आमि तोमाय भालो बाशी।"
मुक्तिवाहिनी के पौरुष के कारण
जनता अब रह न गयी दासी।

•

● सिद्धेश्वर शुक्ल क्रांति।

बोलो हिन्दुस्तान की जय

सजल नेत्र से बंग भूमि ने, तुमको आज निहारा है,
शस्य श्यामला धरती पर, वह चली रक्त की धारा है,
मानवता को मिली चुनौती, दानव ने ललकारा है,
बंग देश के परवानो ने तुमको आज पुकारा है,

बेगुनाह निर्धन जनता पर, होते अत्याचार है,
संगीनो की नोको पर, होते गन्दे व्यापार हैं,
जिसे देख कर लहू खोल उठा हर एक जवान का,
बंग देश, इतिहास लिख रहा, वर्तमान बलिदान का

बंगला देश जवान की जय, गुरिल्लो की शान की जय,
जय-जय-जय उन अमर शहीदो, के शुभमय अरमान की जय,

माँ बहिनो की इज्जत लुटती, जहाँ बीच बाजार मे,
द्रोपदियो का चीर हरण, होता जिसके दरबार मे,
दुश्मन का, हर एक ओर से, हमला बारम्बार है,
बालक वृद्ध युवा, बच्चो की लाशो का अम्बार है,

जहाँ खून के सौदागर के यहियाशाही पाव हैं,
बारूदो की फसल उगी, वीरान हो गए गांव है,
जहाँ मनुजता, बेबस होकर चीख उठी हर ठांव मे,
लगा चुके हैं कृषक और, मजदूर सभी कुछ दांव में,

ऐसे श्रमिक किसान की जय, उनके कर्मठ काम की जय,
जय-जय-जय जय वसुन्धरा की, खेत और खलिहान की जय,

जहाँ भूख के मारे दरदर, घूम रहे गोपाल हैं,
पेट, पीठ मिल एक हो गये, लिये मुई सी खाल है,
संगीनों पर, झूल गये वे, धरा हो गई लाल है,
मसूमो की छाती पर, नापाकी गति विकराल है,

यहियाशाही बर्बरता की, जहाँ न कोई छोर है,
आहें करुण गुहार, चीख की, चतुर्दिशा की शोर है,
हर गरीब भूखों की टोली, चलो क्रान्ति की ओर है,
इन्कलाब की, ज्योति पुंज में, नई सुबह की भोर है,

उसके इस ईमान की जय, निर्धन के बलराम की जय,
जय-जय-जय उस देश भक्त की, उन भूखे भगवान की जय,

चला काफिला नवयुवकों का, आगे बढ़ता जायगा,
सामन्ती, अवशेष जहाँ पर उनके किले ढहायेगा,
राजतन्त्र, साम्राज्यवाद, इस दुनिया से मिट जायेगा,
शोषण मुक्त समाज, यहां पर, नया जमाना आयेगा,

जिसने लूटा सदा मुल्क को, वह निश्चिय पछतायेगा,
जिसने सदा कमाया श्रम से, वही चैन से खायेगा,
समता, सुखद, सुहानी दुनियाँ का संसार बनायेगा,
आज नहीं तो कल मेरा है, मेरा जमाना आयेगा

आने वाले कल की जय, नव युवको के बल की जय
जय-जय-जय इस लोकतन्त्र की, उनके प्रहरी दल की जय

चंगेजी पजे में जकड़ी, जनता आज शिकार है,
बंधा गुलामी की बेड़ी मे, जनमत का अधिकार है,
विश्व युद्ध के खलनाओं का, जमा हुआ बाजार है,
त्राहि-त्राहि मच गयी धरा पर, होता हाहाकार है,

आज हमारी सीमाओ पर, दुश्मन सेबर जैट लिये,
आज हिन्द की सरहद पर, चढ आये पैटन टैंक लिये,
जिसे देख अपने जवान ने, कदम उधर को मोड़ दिये,
दुश्मन के हर टैंक, जहाजों को क्षण भर में तोड़ दिये,

भारत भूमि के प्रण की जय, वीर भूमि के रण की जय,
जय-जय-जय उन लौह लाडलों, के प्रतिपल, हर क्षण की जय,

नये सर्जन की ओर बढ़ रहा, अपना भारतवर्ष है,
कदम-कदम पर आज कर रहा जनवादी संघर्ष है,
समता के युग को मौलिकता, वाला नूतन वर्ष है,
आज क्रान्ति के राजकुमारो, में छाया नव हर्ष है,

क्षपं वाद को आज मिटाना ही जीवन का अर्थ है,
हर किसान मजदूर लड़ाकू, इसमें आज समर्थ,
युद्ध करके मरना ही होगा, वरना जीवन व्यर्थ है,
यही हमारा परम लक्ष्य, यह जीवन का उत्कर्ष है,

जनयुग के संघर्ष की जय, उसके नूतन वर्ष की जय,
जय-जय-जय संघर्ष के राही, उसके नव उत्कर्ष की जय,

भारत की यह परम्परा, सदियों से रही पुरानी है,
शरणागत की सेवा में, ही, दी हमने कुर्बानी है,
उनके हर संकट को अपनी, स्वयं मुसीबत जानी है,
यह भारत की नीति हमारी, जानी है पहचानी है,

इसीलिए हम सहन न पाये, अरि के उपहास को,
समझ गये भाई पर होने वाले इस परिहास को,
एक कोटि बंगला वासी को, दिया आश विश्वास को,
जोड़ दिया है उन पृष्ठों में, फिर स्वर्णिम इतिहास को,

आगन्तुक मेहमान की जय, परम्परा के शान की जय,
जय-जय-जय युग रणचंडी, भारतवर्ष महान की जय,

कवि वाणी में युग परिवर्तन, लाने वाली शक्ति है,
जिसके प्रति हर क्रान्ति पुजारी, में होती अनुरक्ति है,
झूम-झूम वीरों की टोली, दुहराती हर पंक्ति है,
जिसको सुन कर राष्ट्र प्रेम की, विकसित होती भक्ति है,

क्रान्ति बन्धु के बंग देश में, कवियों की हुंकार है,
उगल रही है, आज लेखनी, 'नजरुल' की अंगार है,
'गुरु रवीन्द्र' के गीत गूंजते, जन-जन में झंकार है,
'शायर जोश' फैज अहमद' की नज्मों की रसधार है,

कवि 'नजरुल' इस्लाम की जय, गुरु रवीन्द्र के धाम की जय,
जय-जय-जय उन कलम सिपाही, 'जोश' फैज के नाम की जय,

● सुरेशचन्द्र मिश्र

करूँगा अस्थि-दान !

तुम मांग रहे हो रक्तदान, कह महादान !
मैं आज करूँगा अस्थि-दान, बन जाय वज्र,

मिट जाये खान !!
हम शांति के पुजारी,
अहिंसा के पोषक !
विश्व-शांति, सहअस्तित्व
पंचशील-घोषक !!

दे देंगे तन-मन-धन, कह अल्प-दान !
मैं आज करूँगा अस्थि-दान !!

हम अग्नि को संजोए
चन्दनवत्-शीतल !
बज्र से कठोरतम-
कुसुमादपि कोमल !!

कर देंगे सर्वस्व-दान, कह स्वल्प-दान !
मैं आज करूँगा अस्थि-दान !!

रेहन लाल द्विवेदी

सजग-जनता की होती हार नहीं !

ऐसा है आवेश देश में जिसका पार नही,
देखा माता का ऐसा रक्तिम-शृङ्गार नही।

कठ-कठ मे गान उमड़ते माँ के क्रन्दन के,
कठ-कठ मे गान उमडते मा के अर्चन के।
शीश-शीश पर भाल उमडते माँ पर अर्पण के,
प्राण-प्राण मे भाव उमड़ते शोणित तर्पण के!!

जीवन की धारा मे देखी ऐसी धार नही!
ऐसा है आवेश देश मे जिसका पार नही!!

कोटि-कोटि बढ रहे चरण है साथ-साथ रण मे,
कोटि-कोटि बढ रहे चरण है, साथ-साथ प्रण मे।
कोटि-कोटि उठ रहे साथ हैं माँ के रक्षण मे,
कोटि-कोटि बढ रहे साथ हैं मा के रक्षण मे!!

रणचंडी का रोके रुकता अब अवतार नही!
ऐसा है आवेश देश में जिसका पार नही!!

सत्य-अहिंसा का व्रत अपना कोई पाप नही,
विश्व मैत्री का व्रत भी कोई अभिशाप नही।
यही सत्य है सदा असत की टिकती चाप नही,
सावधान हिंसक! प्रतिहिंसा की कुछ माप नही!!

कोई भी प्रस्ताव पराजय का स्वीकार नही!
जाग्रत राष्ट्र, सजग जनता की होती हार नही!!

सोहन लाल द्विवेदी

आत्म-साधना जागे

ऐसा विजय-दिवस जीवन में बार-बार ही आए!
हिमकिरीटिनी का मस्तक नव विजय-श्री से चमके,
करे वन्दना अमृत छन्द से, मुख पर आभा दमके,
गंगा गले मिले पद्मा से, *मिलन-लहरिया ठमकें,*
जय-बंगला जय-हिन्द घोष से धरती-नभ घहराए!

जागे फिर तेजस्विता राष्ट्र की, वीर-भावना जागे,
साधन नहीं साधकों की दृढ़ आत्म-साधना जागे;
भय न किसी से रहे, बढ़े हम अभय विश्व में आगे,
सत्य न्याय समता का अपना ध्वज-तिरंगा फहराए।

चमके फिर भारत का भूमण्डल पर भाग्य-सितारा,
दूर हटे छाया अब भी जो जीवन मे अंधियारा,
नया सूर्य हो उदित बहे कंचन-किरणों की धारा,
मुरझे हुए सुमन खिल जाये, मधु सौरभ लहराए!

ऐसे अनुपम क्षण मे हम यह पावन पर्व मनाएँ,
चलो मातृ-मंदिर में माँ की नव-आरती सजाएँ!
कोटि-कोटि कठों से मिल ऐसी प्रार्थना गुजाएँ,
युगों-युगों तक देश विजय के पथ पर बढ़ता जाए।
ऐसा विजय-दिवस जीवन में बार-बार ही आए।

• डा हरि वंशराय 'बच्चन'

अग्नि देश

नहीं—
मैं यह आश्वासन नही दे सकूंगा
कि जब तुम आग, अंगार,
लपटों की ललकार,
उतप्त बयार,
क्षार धूम की फूत्कार
को पार कर जाओगे
तो निर्मल, शीतल जल का सरोवर पाओगे
जिसमें बैठ नहाओगे,
रोम रोम जुड़ाओगे
नही—
इस आग-अगार के पार भी
आग होगी, अगार होगे,
और उनके पार फिर आग-अगार,
फिर आग-अगार,
फिर और .....
तो क्या छोर तक तपना-जलना ही होगा ?
नही—
इस आग से त्राण तब पाओगे
जब तुम स्वयं आग बन जाओगे !

• • •